अर्चन-दीपिका

गौड़ीय वेदान्त पब्लिकेशन्स

卐 श्रीश्रीगुरु–गौराङ्गौ–जयतः 卐

अर्चन–दीपिका

श्रीकृष्णचैतन्यदशमाधस्तनान्वयवर श्रीगौड़ीयाचार्य–केशरी
श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके प्रतिष्ठाता
सभापति–आचार्य
ॐ विष्णुपाद १०८ श्रीश्रील भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजीके अनुगृहीत

परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद्भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज
(श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके वर्तमान
आचार्य एवं सभापति)
द्वारा सम्पादित
एवं

परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज
द्वारा संग्रहीत और सङ्कलित

[सर्वाधिकार सुरक्षित]

प्रकाशक : त्रिदण्डिस्वामी श्रीभक्तिवेदान्त माधव महाराज
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा (उ. प्र.)

❁

तृतीय संस्करण :
१० सितम्बर, २००३
श्रीविश्वरूप महोत्सव

❁

प्राप्तिस्थान :

१. श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ, तेघरीपाड़ा, पो–नवद्वीप (प.बं.),फोन–२४००६८

२. श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा (उ. प्र.) फोन–२५०२३३४

३. श्रीरूप–सनातन गौड़ीय मठ, वृन्दावन (उ.प्र.) फोन–२४४३२७०

४. श्रीगिरिधारी गौड़ीय मठ, राधाकुण्ड रोड, गोवर्धन, फोन–२८१५६६८

५. श्रीरमणबिहारी गौड़ीय मठ, बी–३ए, जनकपुरी, नई दिल्ली,फोन–२५५३३५६८

६. श्रीदुर्वाषा ऋषि गौड़ीय आश्रम, ईशापुर, मथुरा (उ.प्र.),२५५०५१०

७. श्रीविनोदबिहारी गौड़ीयमठ, २८ हालदार बागान लेन, कोलकाता,
फोन–२५५५८९७३

८. खण्डेलवाल एण्ड सन्स, बनखण्डी महादेव, वृन्दावन (उ.प्र.)

मुद्रक :
रेक्मो प्रिन्टर्स, नई दिल्ली

भूमिका

शास्त्रोंका कहना है—"सम्प्रदाय-विहीना ये मंत्रास्ते विफला मताः।" ऐसे मन्त्रोंके जपादिके द्वारा मन्त्रसिद्धि नहीं होती। अतएव मङ्गलस्वरूप श्रीभगवानने कलिकालके जीवोंके प्रति असीम करुणा प्रकाश कर उनके लिए उत्तम प्रकारका साधन-भजनपथ प्रकट किया है। इस कलिकालमें चारों वैष्णव-सम्प्रदायोंकी उपासना-पद्धति, विशेषतः श्रीमन् मध्वाचार्य-सम्प्रदायके अनुगत श्रीगौड़ीय वैष्णवसमाजके कल्याणके लिए कलियुग पावनावतारी स्वयं भगवान श्रीमन्महाप्रभु श्रीचैतन्यदेवने श्रील रूप-सनातन-जीव-गोपालभट्ट गोस्वामी आदि वैष्णव आचार्योंके माध्यमसे सात्त्वत-स्मृतिद्वारा अनुमोदित जिन विधि-व्यवस्थाओंका निर्देश दिया है, वे ही इस प्रसङ्गमें हमारे लिए विशेष रूपसे विचार करने योग्य हैं।

श्रीभगवान ही वैष्णवोंके एकमात्र उपास्य हैं। विष्णु मन्त्रद्वारा दीक्षित एवं विष्णु-पूजा करनेवाले व्यक्ति ही वैष्णव हैं। इसलिए विष्णुदीक्षा-ग्रहण एवं विष्णु-पूजन ही वैष्णवताका मुख्य लक्षण है। श्रीवैष्णवोंकी आचार पद्धति एवं कर्त्तव्य समूह, जिनका श्रीचैतन्यमहाप्रभुका कृपा-आदेश प्राप्तकर गौड़ीय वैष्णवाचार्योंने समस्त शास्त्रसमुद्रका मन्थन

कर नवनीताकारमें प्रकाश किया है, वे दीक्षित व्यक्तिमात्रके लिए ही अवश्य ग्रहण करने योग्य एवं आस्वादन करने योग्य हैं। चारों वर्ण एवं चारों आश्रमोंके सभी व्यक्ति विष्णु-मन्त्र-ग्रहण एवं विष्णुपूजा कर वैष्णव बननेके अधिकारी हैं, यह बात विभिन्न शास्त्रोंमें व्यक्त की गई है।

अदीक्षित व्यक्तिके सभी कर्मानुष्ठान निरर्थक हैं। विष्णु-दीक्षाके अभावमें श्रीभगवानके साथ सम्बन्ध स्थापित न होनेके कारण उसकी मुख्य वैष्णवता प्रमाणित नहीं होती। शास्त्रीय विधिके अनुसार दीक्षा संस्कार एवं विष्णु-मन्त्र ग्रहण करनेपर जब सम्बन्ध ज्ञानका उदय हो, तभी यथार्थ वैष्णवतामें प्रतिष्ठित हुआ जा सकता है। श्रीकृष्णनाम-महामन्त्र दीक्षा-पुरश्चरणादि किसी भी विधिकी अपेक्षा नहीं रखते। 'अतएव दीक्षा-ग्रहण आदिकी क्या आवश्यकता है? जैसे-तैसे श्रीभगवानका नाम लेनेसे ही हो जायेगा'—बहुतसे व्यक्ति इस प्रकारकी भ्रान्त धारणा रखते हैं। दीक्षा-विधानके द्वारा जीवके हृदयमें श्रीभगवानके विशेष सम्बन्धका उदय होता है, जिसके प्रभावसे क्रमशः अविद्या (स्वरूपगत अज्ञान) आदिका विनाश होता है। जिस प्रकार उपनयन रहित ब्राह्मण-पुत्रका वेदाध्ययनमें अधिकार नहीं है, उपनयन होनेपर ही उसे वह अधिकार प्राप्त होता है, उसी प्रकार अदीक्षित व्यक्तिका भगवानकी पूजा आदिमें अधिकार नहीं है। दीक्षा-ग्रहणके उपरान्त ही यह अधिकार प्राप्त होता है। दीक्षाके प्रभावसे दिव्यज्ञानका उदय होता है एवं इसीके

द्वारा यथार्थ मनुष्यता प्राप्त होती है। दीक्षा-संस्कार दिव्यज्ञान प्रदान करता है और असीम पापराशिका नाश करता है। इसलिए तत्त्वज्ञ व्यक्तियोंने इस अनुष्ठानको 'दीक्षा' कहा है। रासायनिक प्रक्रियाद्वारा जिस प्रकार काँसा सोना बन जाता है, उसी प्रकार दीक्षा-विधानके द्वारा मानवमात्र ही द्विजत्वको प्राप्त करते हैं। इसलिए दीक्षित होकर श्रीभगवानके साथ सम्बन्ध-विशेष स्थापित करनेकी अत्यन्त आवश्यकता होती है। दीक्षा दुर्बल-चित्त युक्त जीवके पाप-ताप आदिका विनाशकर उसे निर्मल और समुज्ज्वल करती है एवं पहले सात्त्विक भाव प्रकटकर बादमें उसे निर्गुणतामें प्रतिष्ठित कराती है।

"गुरु-पादाश्रयस्तस्मात् कृष्णदीक्षादि शिक्षणम्"—अर्थात् सत्सम्प्रदायके आचार-परायण सद्गुरुका श्रीचरणाश्रय प्राप्तकर दीक्षा-ग्रहण करना एकान्त कर्तव्य है। गुरु साक्षात् श्रीहरिके अभिन्न-विग्रह हैं एवं भगवान श्रीहरि ही जीवोंके गुरु हैं। गुरु जिनके ऊपर प्रसन्न होते हैं, भगवान भी उनके ऊपर प्रसन्न हो जाते हैं। भगवानके अप्रसन्न होनेपर सद्गुरु रक्षा कर सकते हैं, परन्तु गुरुके अप्रसन्न होनेपर भगवान भी उनकी रक्षा नहीं करते। गुरुकृपा ही उनके आश्रित व्यक्तिके लिए एकमात्र भरोसा है। श्रवणगुरु, दीक्षागुरु एवं शिक्षागुरुके भेदसे गुरु तीन प्रकारके होते हैं। गुरु, देवता (भगवान) एवं मंत्र—इन तीनोंका एक ही तात्पर्य है। इनमें भेद ज्ञान रहनेपर सिद्धि कदापि नहीं हो

सकती। अतएव गुरुतत्वको जानकर शास्त्रोंके उपदेशानुसार उनका श्रीचरणाश्रय ग्रहण करनेपर अवश्य ही संसार–बन्धनसे मुक्ति होगी। सद्गुरु–पदाश्रय कर जीव परम पुरुषार्थ प्राप्त कर सकता है।

सद्गुरु–पदाश्रित दीक्षित व्यक्ति यह जान सकते हैं कि श्रीभगवान ही सर्वेश्वर एवं सर्वाराध्य तत्त्व हैं। भक्तिके चौसठ प्रकारके अङ्गोंमें नवधा भक्ति एवं पञ्चाङ्ग भक्तिमें कीर्त्तनाख्या भक्तिको सर्वश्रेष्ठ बतलाया गया है। **"यद्यप्यन्याभक्तिः कलौ कर्त्तव्या, तदा कीर्त्तनाख्या भक्ति–संयोगेनैव"**—इस वाक्यके अनुसार इस कलिकालमें कीर्त्तनाख्या भक्तिकी ही श्रेष्ठता दिखलाई गई है। तथापि जड़ता और हृदयकी दुर्बलताको दूर करनेके लिए विष्णुमंत्रमें दीक्षित कनिष्ठाधिकारी भक्तोंकी सुविधाके लिए यह 'अर्चन–दीपिका' ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। इसमें शौक्र, सावित्र्य और दैक्ष्य जन्मोंके पार्थक्य एवं वैशिष्ट्यका विचार किया गया है। विष्णुमंत्रमें दीक्षित व्यक्तिमात्र ही भगवानके अर्चन करनेके अधिकारी हैं एवं यह अर्चन महामंत्र कीर्त्तनद्वारा ही सर्वाङ्गीणता एवं पूर्णताको प्राप्त करता है, इसका भी इस ग्रन्थमें शास्त्रीय प्रमाण एवं युक्तियोंके द्वारा प्रतिपादन किया गया है।

भगवत्सेवाको छोड़कर जीव कदापि जड़ासक्तिसे मुक्त नहीं हो सकता। इसलिए श्रीनारद पञ्चरात्रादि स्मृति–ग्रन्थोंका अवलम्बनकर श्रीभगवानकी पूजाका विधान किया गया है। श्रीमद्भागवतका कथन है कि सद्गुरुके निकट मंत्रादि

प्राप्तकर, अर्चन-प्रणाली जानकर अपनी अभीष्ट मूर्तिमें भगवान श्रीहरिकी आराधना करनी चाहिए। बद्धजीवोंका चित्त चञ्चल एवं बालोचित अज्ञ स्वभावका होता है। आचार्यके अनुग्रह द्वारा ही चिन्मय विग्रहमें उनकी पूज्यबुद्धिका उदय होता है एवं वे अद्वयज्ञान विष्णुका पूजा-विधान जाननेका सौभाग्य प्राप्त करते हैं। हरिसेवा-विमुख व्यक्ति अर्चन-पथका परित्यागकर कर्म-ज्ञानमें तत्पर होते हैं। पाञ्चरात्रिक अर्चक भक्तियोगको ही सर्वश्रेष्ठ जानते हैं। श्रीभगवानकी उपासनाको छोड़कर अन्य सभी चेष्टाओंमें अपवित्रता वर्त्तमान रहती है। भगवत्सम्बन्धसे रहित होनेपर बहु देवताओंकी पूजा होती है। ऐसा होनेपर श्रीहरिका अर्चन नहीं होता। कदर्य (घृणित) स्वभाव एवं विक्षिप्त-चित्तवाले गृहासक्त व्यक्ति नाना प्रकारके कल्पित पथोंमें फँसकर अर्चनादिका आदर नहीं करते। जीवात्माके प्राकृत अहङ्कारका परित्यागकर सेवक-धर्मको ग्रहण करनेपर ही उनके आराध्य भगवान अर्चा-स्वरूपमें प्रकाशित होते हैं। **"येन जन्मशतैः पूर्व वासुदेवः समर्चितः। तन्मुखे हरिनामानि सदा तिष्ठन्ति भारत।"**—इस श्लोककी व्याख्यामें महाजनोंने कहा है—नाम-भजनसे पहले अर्चावतारकी सेवाकर जीवके कनिष्ठाधिकारसे ऊपर उठकर मध्यमाधिकारमें प्रवेश करनेपर ही भजन-प्रारम्भ होता है। पञ्चरात्र और भागवत—दोनोंमें ही उपासनाकी बात कही गई है। अतएव स्वयं भगवान श्रीचैतन्य महाप्रभुने कहा है—**"कृष्ण मंत्र हैते हबे संसार मोचन। कृष्णनाम हैते पाबे कृष्णेर चरण।"**

कनिष्ठाधिकारके समय भगवानके परिकर-वैशिष्ट्य (पार्षदवर्ग) के अप्राकृतत्व या अलौकिकत्वकी अनुभूति नहीं होती। वासुदेवकी अर्चामें श्रद्धापूर्वक बाह्य उपकरणों द्वारा सेवा करते-करते चिन्मय नाम एवं मन्त्रके स्वरूपकी उपलब्धि या अनुभूति द्वारा प्राकृत विचार क्षीण होने लगता है। अर्चाको छोड़कर दूसरी प्राकृत वस्तुओंमें जीवोंकी भोग-प्रवृत्ति प्रबल होती है। अतएव प्राकृत या कनिष्ठाधिकारमें भगवानके लिए सारी चेष्टाएँ करते हुए दूसरी वस्तुओंका परित्यागकर भगवानके प्रति पूज्यबुद्धिको बढ़ानेका प्रयत्न किया जाता है। अर्चनके अर्चनीय श्रीविग्रह एवं अर्चन ही प्रधान रूपसे ध्यान देने योग्य विषय है। अर्चनाङ्गकी उन्नति होनेपर भजनाङ्गमें प्रवेश होता है। भजनमें अर्चनकी प्राथमिकता न होनेपर भी वह गौरव-विचारका विरोधी नहीं है। अर्चाविग्रह वास्तव वस्तु भगवानके अवतार-विशेष हैं। भगवानके वैभव समूह इस जगतमें कालविशेषमें अवतार ग्रहण करते हैं, किन्तु अन्तर्यामी एवं अर्चा-विग्रह—दोनों सर्वकाल ही सेवनके अनुभव द्वारा जानने योग्य होते हैं। अर्चन एवं भजनमें यही भेद है कि अर्चन मर्यादा-पथका अनुष्ठान है एवं भजन नामाश्रयके माध्यमसे मर्यादा-पथका बाहरी विचारसे अतिक्रमण करनेपर भी सम्पूर्ण रूपसे भगवानकी सेवाका एकान्तिक प्रयास है।

भगवानके अर्चन द्वारा शीघ्र ही चित्तकी प्रसन्नता प्राप्त

होती है एवं यही सब प्रकारके अभीष्ट अथवा मङ्गल-कामनाओंका कारण है। अर्चनको छोड़कर विषयाकृष्ट व्यक्तिके लिए असत्सङ्ग-त्यागादि कार्य संभव नहीं है। सात्त्वत (भगवत् सम्बन्धी) विधिद्वारा भगवदर्चनका उपदेश स्वयं श्रीभगवानने दिया है एवं ब्रह्मा-शिव-नारद-व्यास आदि ऋषियोंने इसे सारे वर्णाश्रमी एवं स्त्री-शूद्रादिके लिए भी परम-आत्मकल्याणकारी बतलाया है। अर्चन तीन प्रकारका है—वैदिक, तान्त्रिक एवं मिश्र। प्रतिमा-स्थण्डिल (यज्ञ-वेदी), आग, सूर्य, जल एवं हृदय—ये सभी अर्चनके आधार हैं। शिलामयी, काष्ठमयी, बालुकामयी, मनोमयी एवं मणिमयी आदि भेदसे प्रतिमाएँ आठ प्रकारकी होती हैं। उनमें भी चल एवं अचल भेदसे दो प्रकारकी हैं। मन्त्रादिके द्वारा स्नान, सन्ध्योपासना, अर्चाका परिमार्जन, वस्त्र एवं अलङ्कार-प्रदान, अर्चनके पात्रों एवं द्रव्यसमूहका प्रोक्षण (छिड़काव आदि), पाद्य, अर्घ्य-आचमनीय, गन्ध-धूप दीप-पुष्प-नैवेद्यादिका अर्पण, पार्षदशक्ति गुरुवर्गकी पूजा, मूलमन्त्रका जप, स्तोत्रादि पाठ, दण्डवत्-प्रणाम, प्रार्थना, निर्माल्य-धारण—ये सभी अर्चनके अङ्ग हैं। श्रीमन्दिर निर्माणपूर्वक श्रीविग्रहप्रतिष्ठा एवं यात्रामहोत्सवादि भी इसके अन्तर्गत हैं। इस प्रकारसे निरपेक्ष भक्तियोग द्वारा श्रीहरिका अर्चन करनेपर उनके चरणकमलोंमें भक्ति प्राप्त होती है।

श्रीअर्चामूर्ति भगवानके अवतार-विशेष होनेके कारण वे अर्चककी श्रद्धाका आकर्षणकर उसका मङ्गल विधान

करते हैं। अर्चाके गठन और उनके उपादानको लेकर जो व्यक्ति अर्चाके प्रति भोग-बुद्धि रखते हैं, भगवद्-विग्रहके प्रति उनकी श्रद्धा नहीं है, यही जानना होगा। कोई भोग्यवस्तु-विशेष समझकर यदि कोई व्यक्ति भगवानके प्रति अर्चनका अभिनय करे, तो उसकी श्रद्धाका अभाव ही जानना चाहिए। विश्वासके साथ भगवानकी श्रीमूर्तिकी सोलह प्रकारके उपचारों द्वारा सेवा-पूजा करनी चाहिए। निष्कपट गृहस्थभक्त उत्तम द्रव्योंके द्वारा ही भगवानकी सेवा करते हैं। प्रबलभक्तिके वशीभूत होकर उच्च अधिकारी वर्णाश्रमादि विधिसे अतीत प्रेमी-भक्त सहज रूपसे प्राप्त द्रव्यों द्वारा भावसेवा ही करते हैं। धनी व्यक्ति यथासाध्य उत्तम पूजा-द्रव्यों द्वारा श्रीमूर्तिका अर्चन एवं उनके सम्बन्धी उत्सवादि करते हैं। इस विषयमें कृपणता करने पर वित्त-शाठ्य दोष होता है एवं क्रमशः सेवा-प्रवृत्ति क्षीण होने लगती है।

श्रीहरिभक्ति विलासमें कहा गया है—

"कृत्यान्येतानि तु प्रायो गृहिणां धनानि सताम्।
लिखितानि न तु त्यक्तपरिग्रह-महात्मनाम्॥"

अर्थात् इसमें सज्जन, धनी गृहस्थोंके कर्तव्य-कार्य आदि ही कहे गये हैं। सर्वत्यागी, उदासीन महात्माओंके सम्बन्ध में यह नहीं कहा गया है।

अन्तमें यह निवेदन है कि इस ग्रन्थके सम्पादक रूपमें मुझ अकिञ्चनका नाम घोषित होनेपर भी मेरे सतीर्थ

पूज्यपाद त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण महाराजके एकान्त आग्रह एवं सेवा-प्रचेष्टासे ही श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिका यह हिन्दी संस्करण प्रकाशित हो रहा है। प्रूफ संशोधन आदि कार्योंके लिए त्रिदडिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त पद्मनाभ महाराज, श्रीमान् शुभानन्द ब्रह्मचारी, श्रीमान् नवीनकृष्ण ब्रह्मचारी आदिकी सेवा-प्रचेष्टा अत्यन्त प्रशंसनीय है। शीघ्रतापूर्वक मुद्रित होनेके कारण इसमें कुछ-कुछ मुद्राकर-प्रमाद रहना सम्भव है। वैष्णवसज्जनगण द्वारा उसे संशोधनपूर्वक पाठ करनेसे हम धन्य होंगे।

श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिका
प्रतिष्ठा-दिवस, अक्षय तृतीया
१८ मधुसूदन, ५०० गौराब्द
२८ वैशाख, १६०८ भारतीयाब्द
१२ मई, १९८६ ई.

श्रीगुरु-वैष्णवदासानुदास
(त्रिदण्डिभिक्षु)
श्रीभक्तिवेदान्त वामन

प्रस्तावना

तृतीय–संस्करण

यह बड़े हर्षका विषय है कि श्रीअर्चन–दीपिका हिन्दी भाषामें प्रथम एवं द्वितीय संस्करण इतना लोकप्रिय हुआ कि कुछ ही दिनोंमें सारी पुस्तकें वितरित हो गईं। भारत तथा विदेशोंके हिन्दीभाषी श्रद्धालु इसकी बहुत अधिक रूपमें माँग करने लगे।

प्रस्तुत संस्करणकी प्रतिलिपि प्रस्तुत करने, प्रूफसंशोधन, कम्प्यूटर द्वारा कम्पोज आदि विविध सेवाकार्योंके लिए श्रीओमप्रकाश ब्रजवासी एम.ए., एल–एल.बी., साहित्यरत्न, श्रीमान् परमेश्वरी दास ब्रह्मचारी, श्रीमान् माधवप्रिय ब्रह्मचारी, श्रीमान् सुबलसखा ब्रह्मचारी, श्रीमान् मधुमङ्गल ब्रह्मचारी आदिकी सेवा प्रचेष्टा अत्यन्त सराहनीय व उल्लेखनीय है। श्रीगुरु–गौराङ्ग–गान्धर्विका–गिरिधारी इनपर प्रचुर कृपाशीर्वाद वर्षण करें, मेरी यही प्रार्थना है।

यह संस्करण भी अत्यन्त शीघ्र प्रकाशित हुआ है, जिससे इसमें भी कुछ मुद्राकर प्रमाद आदि त्रुटि–विच्युतियोंका रहना सम्भव है। सुधी पाठकवृन्दद्वारा उनका संशोधनपूर्वक पाठ करनेसे हम लोग आनन्दित होंगे।

श्रीकृष्णजन्माष्टमी
२० अगस्त, २००३

अलमतिविस्तरेण—
श्रीगुरुवैष्णवकृपालेश–प्रार्थी
श्रीभक्तिवेदान्त नारायण

भगवदर्चनका माहात्म्य

(१)विशिष्टः सर्वधर्माच्च धर्मो विष्णवर्चनं नृणाम्।
सर्वयज्ञ–तपोहोमस्तीर्थस्नानंश्च यत् फलम्॥
तत् फलं कोटिगुणितं विष्णुं संपूज्य चाप्नुयात्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन नारायणमिहार्चयेत्॥

स्कन्द–पुराण, सनत कुमार–मार्कण्डेय सम्वादमें कहा गया है—मनुष्योंके लिए विष्णुपूजा सभी धर्मोंकी अपेक्षा श्रेष्ठ धर्म है। सभी प्रकारके यज्ञ, तपस्या, होम एवं तीर्थ–स्नान आदिके द्वारा जो फल मिलता है, एकबार विष्णुपूजा करने पर उस फलसे कोटिगुणा फल मिलता है। इसलिए इस संसारमें विशेष प्रयत्नके साथ नारायणकी पूजा करनी चाहिए।

(२) श्रीविष्णोरर्चनं ये तु प्रकुर्वन्ति नरा भुवि।
ते यान्ति शाश्वतं–विष्णोरानन्दं परं पदम्॥

विष्णुरहस्य में कहा गया है—इस संसारमें जो मनुष्य विष्णुसेवामें नियुक्त हैं, वे सब भगवानके नित्य आनन्दमय परमधामको प्राप्त करते हैं।

(३) संसारेऽस्मिन् महाघोरे जन्ममृत्युभयाकुले।
पूजनं वासुदेवस्य तारकं वादिभिः स्मृतम्॥

स्कन्द–पुराणके अन्तर्गत श्रीब्रह्म–नारद सम्वादमें कहा गया है—भगवान् वासुदेवकी पूजा ही जन्ममृत्युके भयसे परिपूर्ण इस महाघोर संसारसे उत्तीर्ण होनेका एकमात्र एवं सर्ववादि–सम्मत उपाय है।

(४) इत्थं हि प्रातरुत्थानात् प्रत्यहं शयनावधि।
श्रीकृष्णं पूजयन् सिद्धसर्वार्थोऽस्य प्रियो भवेत्॥

विष्णुपुराण, और्व–सगर सम्वादमें कहा गया है—जो व्यक्ति प्रातःकालसे आरम्भ कर शयनकाल तक प्रतिदिन श्रीकृष्णकी पूजा करते हैं, वे समस्त प्रकारकी सिद्धियाँ प्राप्त कर लेते हैं एवं भगवानके प्रियभाजन होते हैं।

(श्रीहरिभक्तिविलाससे उद्धृत)

卐 श्रीश्रीगुरु–गौराङ्गौ–जयतः 卐

अर्चन–दीपिका

मङ्गलाचरणम्

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपदकमलं श्रीगुरून् वैष्णवांश्च
श्रीरूपं साग्रजातं सहगण–रघुनाथान्वितं तं सजीवम्।
साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं कृष्णचैतन्य–देवं
श्रीराधा–कृष्णपादान् सहगण ललिता–श्रीविशाखान्वितांश्च॥

श्रीगुरु–प्रणामः

ॐअज्ञान–तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
नमः ॐ विष्णुपादाय आचार्य–सिंहरूपिणे।
श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान–केशव इति नामिने॥
अतिमर्त्त्यचरित्राय स्वाश्रितानाञ्च–पालिने।
जीवदुःखे सदार्त्ताय श्रीनामप्रेम–दायिने॥

श्रील प्रभुपाद–वन्दना

नमः ॐ विष्णुपादाय कृष्णप्रेष्ठाय भूतले।
श्रीमते भक्तिसिद्धान्त–सरस्वतीति नामिने॥

श्रीवार्षभानवीदेवी–दयिताय कृपाब्धये।
कृष्ण–सम्बन्ध–विज्ञान दायिने प्रभवे नमः॥
माधुर्योज्ज्वल–प्रेमाढ्य–श्रीरूपानुग–भक्तिद ।
श्रीगौर–करुणाशक्ति–विग्रहाय नमोऽस्तुते॥
नमस्ते गौरवाणी–श्रीमूर्त्तये दीन–तारिणे।
रूपानुग–विरुद्धापसिद्धान्त–ध्वान्त–हारिणे ॥

श्रील गौरकिशोर–वन्दना

नमो गौरकिशोराय साक्षाद् वैराग्यमूर्त्तये।
विप्रलम्भ–रसाम्भोधे पादाम्बुजाय ते नमः॥

श्रील भक्तिविनोद–वन्दना

नमो भक्तिविनोदाय सच्चिदानन्द–नामिने।
गौरशक्ति–स्वरूपाय रूपानुग–वराय ते॥

श्रील जगन्नाथ–वन्दना

गौराविर्भावभूमेस्त्वं निर्देष्टा सज्जन–प्रियः।
वैष्णव–सार्वभौम–श्रीजगन्नाथाय ते नमः॥

श्रीवैष्णव–वन्दना

वाञ्छा–कल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः॥

श्रीनित्यानन्द–प्रणामः

संकर्षणः कारणतोयशायी गर्भोदशायी च पयोब्धिशायी।
शेषश्च यस्यांशकलाः स नित्यानन्दाख्यरामः शरणं ममास्तु॥

श्रीगौराङ्ग–प्रणामः

नमो महावदान्याय कृष्णप्रेम–प्रदाय ते।
कृष्णाय कृष्णचैतन्य–नाम्ने गौरत्विषे नमः॥

श्रीकृष्ण–प्रणामः

हे कृष्ण! करुणासिन्धो दीनबन्धो जगत्पते।
गोपेश गोपिकाकान्त राधाकान्त नमोऽस्तु ते॥

श्रीराधा–प्रणामः

तप्त–काञ्चन गौराङ्गि राधे वृन्दावनेश्वरि।
वृषभानुसुते देवि प्रणमामि हरिप्रिये॥

श्रीसम्बन्धाद्यधिदेव–प्रणामः

जयतां सुरतौ पङ्गोर्मम मन्द–मतेर्गती।
मत्सर्वस्व पदाम्भोजौ राधा–मदनमोहनौ॥
दीव्यद्–वृन्दारण्य–कल्पद्रुमाधः श्रीमद्रत्नागार–सिंहासनस्थौ।
श्रीश्रीराधा–श्रीलगोविन्द–देवौ प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि॥
श्रीमान्–रास–रसारम्भी वंशीवट–तटस्थितः।
कर्षन् वेणु–स्वनैर्गोपीर्गोपीनाथः श्रियेऽस्तु नः॥

श्रीतुलसी–प्रणामः

वृन्दायै तुलसीदेव्यै प्रियायै केशवस्य च॥
कृष्णभक्ति प्रदे देवि सत्यवत्यै नमो नमः॥
भक्त्या विहीना अपराधलक्षैः, क्षिप्ताश्च कामादि तरङ्गमध्ये।
कृपामयि! त्वां शरणं प्रपन्ना, वृन्दे! नुमस्ते चरणारविन्दम्॥

श्रीपञ्चतत्त्व–प्रणामः

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द।
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि–गौरभक्तवृन्द॥

समष्टिगत–प्रणामः

गुरवे गौरचन्द्राय राधिकायै तदालये।
कृष्णाय कृष्ण–भक्ताय तद्भक्ताय नमो नमः॥

महामन्त्र

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

जय–ध्वनि

श्रीश्रीगुरु–गौराङ्ग–गान्धर्विका–गिरिधारी–राधाविनोदबिहारीजीकी जय।

(उसके पश्चात् अपने–अपने श्रीगुरुदेवका नाम उच्चारण करते हुए जय देनी चाहिए)

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजकी जय।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपादकी जय।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद परमहंस बाबाजी श्रीश्रील गौरकिशोरदास गोस्वामी महाराजकी जय।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद सच्चिदानन्द श्रील भक्तिविनोद ठाकुरकी जय।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद वैष्णवसार्वभौम श्रील जगन्नाथदास बाबाजी महाराजकी जय।

जय श्रीगौड़ीय वेदान्ताचार्य श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुकी जय।

जय श्रील विश्वनाथ चक्रवर्त्ती ठाकुरजीकी जय।

जय श्रील नरोत्तम–श्रीनिवास–श्यामानन्द प्रभुत्रयकी जय।

जय श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी प्रभुकी जय।

जय श्रीरूप, सनातन, भट्ट–रघुनाथ, श्रीजीव, गोपालभट्ट, दास–रघुनाथ षड्‌गोस्वामी प्रभुकी जय।

जय श्रीस्वरूप दामोदर, राय रामानन्दादि श्रीगौरपार्षदवृन्दकी जय।

नामाचार्य श्रील हरिदास ठाकुरकी जय।

प्रेमसे कहो श्रीकृष्णचैतन्य–प्रभुनित्यानन्द, श्रीअद्वैत–गदाधर–श्रीवासादि श्रीगौरभक्तवृन्दकी जय। श्रीअन्तर्द्वीप मायापुर, सीमन्तद्वीप, गोद्रुमद्वीप, मध्यद्वीप, कोलद्वीप, ऋतुद्वीप, जह्नुद्वीप,

मोदद्रुमद्वीप, रुद्रद्वीपात्मक श्रीनवद्वीप धामकी जय। श्रीश्रीराधा–कृष्ण गोप–गोपी–गो–गोवर्धन द्वादश वनात्मक श्रीब्रजमण्डलकी जय। द्वादश उपवनोंकी जय। श्रीश्यामकुण्ड–राधाकुण्ड–यमुना–गङ्गा–तुलसी–भक्तिदेवीकी जय। श्रीजगन्नाथ–बलदेव–सुभद्राजीकी जय। सर्वविघ्नविनाशनकारी श्रीनृसिंहदेवकी जय। भक्तप्रवर श्रीप्रह्लाद महाराजकी जय। चारों धामकी जय। चारों सम्प्रदायकी जय। चारों आचार्यकी जय। आकर मठराज श्रीचैतन्य मठकी जय। श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिकी जय। श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ और तत्शाखा मठ–समूहकी जय श्रीहरिनाम संकीर्त्तनकी जय। अनन्त कोटि वैष्णववृन्दकी जय। समागत भक्तवृन्दकी जय। श्रीनिताइ गौर प्रेमानन्दे हरि हरि बोल।

श्रीअर्चा और अर्चन

परम करुणामय स्वयं-भगवान् श्रीकृष्ण जीवोंपर अहैतुकी कृपा करनेके लिए इस मायिक संसारमें श्रीअर्चाविग्रह और श्रीहरिनाम—इन दो रूपोंमें नित्य प्रकटित हैं। श्रीभगवानका अर्चाविग्रह उनके नित्य स्वरूपसे अभिन्न है। इसलिए श्रीचैतन्यचरितामृतमें कहा गया है—"**प्रतिमा नह तुमि, साक्षात् ब्रजेन्द्रनन्दन**"। अतएव श्रीकृष्णका अर्चा-विग्रह साक्षात् ब्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण ही है। लेकिन अभिन्न होनेपर भी इनमें परस्पर लीलाविलासगत वैचित्र्य वर्त्तमान है। अमल पुराण श्रीमद्भागवतमें आठ प्रकारके अर्चाविग्रहोंका उल्लेख किया गया है—

शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती।
मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधा स्मृता॥

(भा. ११/२७/१२)

अर्थात् भगवान्‌की अर्चामूर्त्ति आठ प्रकारकी है—

(१) शिलामयी (२) काष्ठमयी (३) लोहा, सोना आदि धातुमयी, (४) मृण्मयी, (५) चित्रपटमयी, (६) बालुकामयी, (७) मनोमयी एवं (८) मणिमयी।

श्रीभगवानके विग्रहके प्रति प्राकृत या मायिक बुद्धि अर्थात् पुत्तलिका बुद्धि करना महान् अपराध है। श्रीविग्रह पत्थर, लकड़ी या किसी धातुसे बनाये गये हैं एवं इसके पश्चात् उनमें भगवत्ताका आरोप किया गया है अथवा उसी

प्राकृत मूर्त्तिमें चिन्मय भगवत्तत्व आविर्भूत हुआ है या वह प्राकृत मूर्त्ति ही चिन्मय वस्तुमें परिणत हो गयी है—ऐसा नास्तिकतापूर्ण विचार नरकगमनका कारण है। ऐसे विचारयुक्त पुरुषको शास्त्रोंमें नारकी कहा गया है—

अर्च्ये विष्णो शिलाधीर्गुरुषु नरमतिर्वैष्णवे जातिबुद्धि-
र्विष्णोर्वा वैष्णवानां कलिमलमथने पादतीर्थेऽम्बुबुद्धिः।
श्रीविष्णोर्नाम्नि मन्त्रे सकलकलुषहे शब्दसामान्यबुद्धि-
र्विष्णौ सर्वेश्वरेशे तदितरसमधीर्यस्य वा नारकी सः॥

(पद्मपुराण)

जो व्यक्ति श्रीअर्चाविग्रहके प्रति काठ, पत्थर या धातु द्वारा निर्मित जड़बुद्धि, श्रीभगवत्पार्षद श्रीगुरुदेवके प्रति साधारण मरणशील मनुष्य-बुद्धि, वैष्णवोंके प्रति जाति-बुद्धि, कलिमलनाशक श्रीविष्णु और श्रीवैष्णवोंके चरणामृतके प्रति साधारण जलबुद्धि, सब प्रकारके कल्मषों (पापों) को नाश करनेवाले श्रीविष्णुके नाम और मन्त्रके प्रति साधारण शब्द-बुद्धि करता है एवं सर्वेश्वर श्रीविष्णुको अन्यान्य देवताओंके समान मानता है, वह व्यक्ति नारकी (नरकमें जाने योग्य) है। गौरवबुद्धि या सम्भ्रम ज्ञान सहित पाञ्चरात्रिक-विधानके अनुसार विविध उपचारोंद्वारा श्रीअर्चाविग्रहकी जो सेवा की जाती है, उसीका नाम अर्चन है। प्राथमिक अवस्थामें कनिष्ठाधिकारीका अर्चन एवं श्रीरघुनाथदास गोस्वामी आदि गोस्वामियों या परम भागवतोंकी भाव-सेवाके अन्तर्गत श्रीविग्रह-सेवा बाहरी दृष्टिसे एक

समान दीखनेपर भी दोनों कभी भी एक वस्तु नहीं हो सकते। कनिष्ठाधिकारीके अर्चनमें अर्चनकारी साधककी स्थूल-लिङ्ग देहके प्रति अहं-मम बुद्धि होती है, किन्तु रागमार्गीय भाव-सेवामें विशुद्धात्माकी प्रपञ्चातीत अधोक्षज या अप्राकृत भगवानके साथ साक्षात् सेवाका सम्बन्ध रहता है।

जीवमात्र ही स्वरूपतः भगवानका दास है; किन्तु भगवानसे बहिर्मुख होनेके कारण जड़ देहके प्रति आत्मबुद्धि आरोप कर वह अनादि कालसे इस जड़ जगतमें ऊँची-नीची योनियोंमें भ्रमण करते हुए त्रितापोंसे दग्ध हो रहा है। जब तक वह भगवानसे बहिर्मुख रहेगा, तब तक उसे भगवत्प्राप्ति नहीं होगी और तब तक वह मायाके कारागारमें ही आबद्ध रहेगा। इस प्रकार संसारमें भ्रमण करते-करते जब किसी भाग्यशाली जीवके हृदयमें भगवानकी सेवा करनेकी प्रवृत्ति या भगवद्-उन्मुखताका उदय होता है, तभी उसे कृष्णप्राप्ति होती है। अतएव भगवत्सेवा-प्रवृत्ति या भगवद्भक्ति ही भगवानको प्राप्त करनेका एकमात्र उपाय है—यह श्रुति-स्मृति, उपनिषद्, पुराण एवं पञ्चरात्र आदि सर्वशास्त्र- सम्मत अटल सिद्धान्त है। (क) श्रीमद्भागवतमें

(क) **श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।**
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्॥

(श्रीमद्भा. ७/५/२३)

कीर्तित नौ प्रकार, (ख) श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु एवं (ग) श्रीचैतन्यचरितामृत–ग्रन्थमें वर्णित पञ्चप्रकारके भक्ति–अङ्गोंमें 'अर्चन' रूप भक्ति–अङ्गका उल्लेख पाया जाता है। यद्यपि श्रीनाम–संकीर्त्तन ही युगधर्म है एवं श्रीनाम–भजनके द्वारा ही सर्वसिद्धि होती है अर्थात् कृष्ण–प्रेम तक प्राप्त होता है। यहाँ तक कि उसमें मन्त्रादि–दीक्षाकी भी वस्तुतः कोई आवश्यकता नहीं होती। फिर भी स्वभावतः स्थूल–लिङ्ग देहादिके सम्बन्धके कारण कदर्य स्वभाव और विक्षिप्त चित्त–परायण मनुष्योंकी उन सभी वृत्तियोंका संकोच करनेके लिए श्रीनारदादि महाजनोंने किसी–किसी स्थानविशेषमें पांचरात्रिक विधानके अनुसार दीक्षा और अर्चनकी विशेष मर्यादा या विधि स्थापन की है। अधिकारी–विशेषके द्वारा दीक्षा और

(ख) **श्रद्धा विशेषतः प्रीति श्रीमूर्त्तेरङ्घ्रि–सेवने।**
श्रीमद्भागवतार्थानामास्वादो रसिकैः सह॥
सजातीयाशये स्निग्धे साधौ सङ्गः स्वतो वरे।
नाम–संकीर्त्तनं श्रीमन्मथुरामण्डले स्थितिः॥

(भ. र. सि. पू. २/८९–९०)

(ग) **साधुसङ्ग, नाम–कीर्त्तन, भागवत–श्रवण।**
मथुरावास, श्रीमूर्तिर श्रद्धाय सेवन॥
सकल साधन–श्रेष्ठ एइ पञ्च अङ्ग।
कृष्णप्रेम जन्माय एइ पाँचेर अल्पसङ्ग॥

(चै. च. म. २२/१२४–१२५)

अर्चन-विधिका उल्लंघन करनेपर प्रायश्चित्तकी भी विधि देखी जाती है। अतएव सभी वैष्णव-सम्प्रदायोंमें ही कदर्य-स्वभाव और चित्त-विक्षिप्तताको दूर करनेके उद्देश्यसे अधिकारी-विशेषके लिए श्रीनाममन्त्र-दीक्षाके पश्चात् अर्चनकी विशेष व्यवस्था की गई है।

अर्चनमें श्रीभगवन्नाम-मन्त्रकी ही प्रधानता है। श्रीभगवन्नाम कीर्त्तन ही अर्चनका प्राण है। नाम-संकीर्त्तन रहित अर्चन फलप्रद नहीं होता। विशेषकर कलियुगमें कीर्त्तनाख्या भक्तिके सहयोगसे रहित केवलमात्र अर्चनका ही नहीं, बल्कि किसी भी भक्ति-अङ्गका अनुष्ठान विधेय नहीं है। अतः भगवानके प्रबोधन (जागरण) से लेकर शयन-पुष्पाञ्जलि तक सभी अर्चन-अङ्गोंके आदि, मध्य और अन्तमें श्रीनाम-कीर्त्तन अवश्य ही करना चाहिए।

सद्‌गुरुद्वारा पाञ्चरात्रिकी-दीक्षासे दीक्षित ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, संकर और अन्त्यज जातिके व्यक्तिमात्रका (स्त्री पुरुष आदि सभीका) श्रीशालग्राम आदि श्रीभगवद्-विग्रहके अर्चनमें साधु-शास्त्र-सम्मत अधिकार है। अदीक्षित व्यक्तिका इसमें अधिकार नहीं है। सद्‌गुरुसे प्राप्त पाञ्चरात्रिक दीक्षा द्वारा पारमार्थिक ब्राह्मणत्व सिद्ध होता है—यह सर्वशास्त्र-सम्मत सिद्धान्त है। इस प्रकार दीक्षित व्यक्ति ही श्रीविष्णुकी सेवा-पूजाके यथार्थ अधिकारी हैं। दीक्षित गृहस्थमात्रके लिए ही श्रद्धापूर्वक श्रीविग्रहका अर्चन करना कर्त्तव्य है, अन्यथा वित्तशाठ्य दोषसे पतित होनेकी सम्भावना है।

अर्चन दो प्रकारका होता है—(१) जपाङ्ग–अर्चन और (२) भक्त्यङ्ग–अर्चन। मन्त्रसिद्धिके उद्देश्यसे जो अर्चन होता है, उसे जपाङ्ग–अर्चन कहते हैं। यह जपाङ्ग–अर्चन कर्मके अन्तर्गत है। कर्म–जड़ स्मार्त्तोंका अर्चन जपाङ्ग–अर्चन है, वह भक्तिका अङ्ग नहीं है। भगवत्प्रीतिको लक्ष्य कर भक्तिकी वृद्धिके लिए प्रीतिपूर्वक जो अर्चन किया जाता है, वही भक्तिका अङ्ग है और साक्षात् भगवान्‌की सेवा है। श्रीरूपानुग शुद्धभक्तोंका अर्चन ही भक्त्यङ्ग–अर्चन है। नवधा–भक्ति या पञ्चधा–भक्तिके अन्तर्गत श्रीभगवानके अर्चनमें जपाङ्गका आवाहन, प्राणायाम, न्यास और मुद्रा आदिका प्रयोग या व्यवहार अनुचित है, क्योंकि शुद्ध भक्तद्वारा पूजित श्रीविग्रह साक्षात् भगवान् हैं एवं वे नित्यकाल प्रकटित हैं।

उपर्युक्त भक्त्यङ्ग–अर्चन भी दो प्रकारका होता है—(१) गृहस्थ व्यक्ति अपने घरमें श्रीशालग्राम अथवा श्रीगोवर्द्धन शिला या भगवानकी अन्यान्य अर्चा–मूर्तियोंकी जो सेवा–पूजा करते हैं एवं (२) भगवत्सेवा प्रकाशके लिए मठ या आश्रमके स्वतन्त्र देवालयमें प्रतिष्ठित प्राचीन या आधुनिक भगवद्–विग्रहोंकी सेवा–पूजा। इनमें प्रथम तो अपने सामर्थ्यानुसार प्राप्त उपकरणोंद्वारा संक्षेप–सेवा है एवं दूसरी राजसेवा है। राजसेवामें नित्यपूजा अवश्य ही करनी चाहिए। इसके विपरीत करनेसे दोष होता है। भगवद्–विग्रहोंकी पूजा भगवत्प्रीतिके उद्देश्यसे ही करनी चाहिए। निम्नाधिकारी

व्यक्ति उसे कर्त्तव्य मानकर करते हैं। राजसेवामें अर्चन-विधिकी विभिन्न कठोरताओंका सभी प्रकारसे निर्वाह करना आवश्यक है। स्थान, काल और पात्रके अनुसार निर्धारित नियमोंकी कठोरताएँ निष्ठापूर्वक पालन करनी चाहिए। गृहत्यागी एवं गृहस्थ-दोनों ही राजसेवामें अपने परिवारवर्ग, वैष्णव, अतिथि एवं अभ्यागत आदिके प्रयोजनानुसार श्रीभगवद्विग्रहके निवेदनीय भोगकी मात्रा कम या अधिक कर सकते हैं। व्रतोपवासके दिनोंमें भी श्रीभगवानको अन्न निवेदन अवश्य करना चाहिए, किन्तु उस दिन उस निवेदित अन्नको स्वयं ग्रहण न करें। उसको दूसरे दिन ही ग्रहण करें या दूसरे किसी व्यक्तिको दे दें। विभिन्न ऋतुओंमें तत् समयोचित सेवा एवं उस समय उत्पन्न फल और अन्न-व्यञ्जन आदि भगवानको निवेदन करना उचित है। सेवापराध न हो, इस विषयमें विशेषरूपसे सावधान रहना कर्त्तव्य है।

पञ्चाङ्ग-अर्चन

साधारणतः अर्चनके पाँच अङ्ग हैं। इसको पञ्चाङ्ग विष्णु-यज्ञ भी कहते हैं। ब्राह्म-मुहूर्तमें श्रीभगवान्के प्रबोधनसे आरम्भकर रात्रिमें शयन-पुष्पाञ्जलि तक नाना प्रकारके सेवा-कार्य इसके अन्तर्गत आते हैं। पाँच अङ्ग ये हैं— अभिगमन, उपादान, योग, स्वाध्याय और इज्या।

(१) **अभिगमन**—श्रीभगवानके मन्दिरका मार्जन, उपलेपन और निर्माल्यको दूर करना।

(२) **उपादान**—पुष्प–तुलसी आदिका चयन, गन्ध और अन्यान्य सेवोपकरणोंका संग्रह।

(३) **योग**—भूत–शुद्धि अर्थात् अपनेको जड़ देह और मनसे अतीत शुद्ध चिन्मय आत्म–स्वरूपसे अप्राकृत वैकुण्ठ या ब्रजधाममें श्रीकृष्णके नित्यदास रूपसे भावना।

(४) **स्वाध्याय**—नाम और मन्त्रका अर्थ चिन्तनपूर्वक जप, कीर्त्तन, सूक्त, स्तव–स्तोत्रादि पाठ, श्रीकृष्ण–संकीर्त्तन, श्रीमद्भागवत, श्रीचैतन्यचरितामृतादि सत्–सिद्धान्तपूर्ण शुद्ध भक्तिशास्त्रोंका अनुशीलन।

(५) **इज्या**—अपने उपास्यकी नाना प्रकारसे सेवा।

यह पञ्चाङ्ग–अर्चन अनित्य कर्मजड़ क्रियामात्र नहीं है, अपितु यह नित्य विशुद्ध एवं भगवानकी प्राप्ति करानेवाला भक्ति–अङ्ग है। अतएव श्रीमद्भागवत मतावलम्बी वैष्णवोंके लिए श्रीसनातन गोस्वामीद्वारा रचित वैष्णव–स्मृति श्रीहरि–भक्तिविलास और अन्यान्य महाजनोंके ग्रन्थ, निबन्ध एवं उपदेश–समूहसे यह श्रीरूपानुगसम्मत संक्षिप्त "अर्चन–दीपिका" सङ्कलित हुई है।

नित्यकृत्य

ब्राह्ममुहूर्त्त–कृत्य

ब्राह्म–मुहूर्त्त—चौबीस मिनटका एक दण्ड होता है एवं दो दण्ड अर्थात् ४८ मिनटका एक मुहूर्त्त होता है। एक दिन–रातमें कुल तीस मुहूर्त्त होते हैं। रात्रिके शेष भागमें सूर्योदयसे दो मुहूर्त्त अर्थात् १ घण्टा ३६ मिनट पहलेके समयको अरुणोदयकाल कहा जाता है। इस दो मुहूर्त्त समयमें प्रथम मुहूर्त्तको ब्राह्म–मुहूर्त्त कहते हैं। यह ब्राह्म–मुहूर्त्त परमार्थ साधनके लिए सर्वश्रेष्ठ समय है।

इस ब्राह्म–मुहूर्त्तमें श्रीश्रीगुरु–गौराङ्ग–राधाविनोदबिहारीजीका जयगान करते हुए पञ्चतत्त्व और महामन्त्र–कीर्त्तन करते–करते शय्या त्याग करनी चाहिए। उसके पश्चात् दन्तधावन, मुख, हाथ, पैर आदि प्रक्षालन, बाह्य–कृत्य (शौचादि) समापन, स्नान (सम्भवपर न होनेपर रात्रिके कपड़ोंको बदलकर शुद्ध वस्त्र परिधान) करना चाहिए। इसके पश्चात् श्रीगुरुपादपद्मका ध्यान करते हुए श्रीगुरु–वन्दना एवं गुर्वाष्टक आदिका कीर्त्तनकर श्रीगुरुदेवका स्तव करेंगे। तत्पश्चात् प्रीतिपूर्वक कृष्णनाम कीर्त्तन और स्मरण करते हुए इन श्लोकोंका पाठ करेंगे—

जयति जननिवासो देवकीजन्मवादो
यदुवरपरिषद् स्वैः दोर्भिरस्यन्नधर्मम्।
स्थिरचरवृजिनघ्नः सुस्मितश्रीमुखेन
व्रजपुरवनितानां वर्द्धयन् कामदेवम्॥ (क)

विदग्ध–गोपालविलासिनीनां सम्भोगचिह्नाङ्कितसर्वगात्रम्।
पवित्रमाम्नायगिरामगम्यं ब्रह्म प्रपद्ये नवनीतचौरम्॥ (ख)

उद्गायतीनामरविन्दलोचन व्रजाङ्गनानां दिवमस्पृशद् ध्वनिः।
दध्नश्च निर्मन्थनशब्दमिश्रितो निरस्यते येन दिशाममङ्गलम्॥ (ग)

इस प्रकार और भी अन्यान्य श्लोक और स्तव–स्तुति पाठ कर सकते हैं। तत्पश्चात् श्रीगुरु–गौराङ्ग–राधाविनोदबिहारीजीको साष्टाङ्ग प्रणाम करेंगे।

(क) देवकीके गर्भसे जन्म ग्रहण करनेकी बात जिनके सम्बन्धमें वाद मात्र है, ऐसे जननिवास यशोदानन्दन जययुक्त हों। श्रेष्ठ यादवोंसे जिनकी सभा सुशोभित है एवं अपने और अपने निजजनोंके बाहुबल द्वारा जो अधर्मका विनाश करते हैं—ऐसा प्रवाद होनेपर भी चल–अचल आदि सभी जीवोंके समस्त अमङ्गल जिनके नाम–कीर्त्तन मात्रसे दूर हो जाते हैं, जिनके मन्द मुस्कानयुक्त श्रीमुखद्वारा ब्रजगोपियोंके अप्राकृत कामकी सर्वदा वृद्धि होती है—ऐसे ब्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण जययुक्त हों।

(ख) मैं उन परम रसिक–शिरोमणि परब्रह्मस्वरूप गोपाल (श्रीकृष्ण) के शरणागत होता हूँ, जो उनके सङ्ग विलास करनेवाली सुचतुरा गोपियोंके सम्भोग–चिह्नोंको

दन्त–धावन—सूर्योदयसे पहले दन्तधावन करें। काँटेवाले वृक्षकी दातुन पवित्र हाती है। दूध–युक्त वृक्षकी दातुन परमायुवर्द्धक एवं कटु, तिक्त, कषाय रसयुक्त दातुन सुख–सम्पत्तिवर्द्धक होती है। दातुन मध्यमा अङ्गुलीकी तरह मोटी, बारह अङ्गुल लम्बी एवं छालयुक्त होनी चाहिए। दातुनको मूलकी ओर पकड़कर अग्रभाग द्वारा दन्तधावन करना चाहिए। अर्चनकारी उपवासके दिन भी यथारीति दन्तधावन करेंगे।

स्नान—समर्थ व्यक्तिको शीतल जलसे प्रातःस्नान अवश्य करना चाहिए। शीतल जलसे स्नान करनेमें असमर्थ होने पर हल्के गरम जलसे स्नान करेंगे। स्नानसे पूर्व मलमूत्र–त्याग और शौचक्रिया कर लेनी चाहिए। कूप, सरोवर या नदीमें स्नान करना क्रमशः उत्तम है। कृष्णनाम–कीर्त्तन और स्मरणसे सर्वश्रेष्ठ स्नान होता है; इसको मानस–स्नान भी कहते हैं। सभी व्यक्तियोंको जलसे स्नान कर मानस–स्नान करना आवश्यक है। शास्त्रोंमें मानस–स्नानका सर्वश्रेष्ठत्व देखा जाता है—

अपने सभी अङ्गोंमें धारण किये हुए हैं। जो माखन चुरानेवाले तथा वेदवाक्योंके अगोचर हैं।

(ग) कमललोचन श्रीकृष्णके नाम–रूप–गुण–लीलाओंका ऊँचे स्वरसे कीर्त्तन करती हुई ब्रजाङ्गनाओंकी मधुर कण्ठ–ध्वनि दधिमन्थन–शब्दके साथ मिलकर आकाशमें व्याप्त होकर सभी दिशाओंके अमङ्गलको दूर कर रही है।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर–शुचिः॥

शिखा–बन्धन—स्नानके पश्चात् केशोंको एकत्रकर प्रणव सहित गायत्री स्मरण करते–करते शिखा–बन्धन करेंगे।

वस्त्र—स्नानके पश्चात् पवित्र वस्त्र धारण करेंगे। बिना धुले, बहुत दिन पहले धुले हुए, धोबीद्वारा धोये हुए, मलिन अथवा भीगे हुए, मल–मूत्र त्यागनेके समय पहने गये वस्त्र देवार्चन करते समय धारण नहीं करें। अर्चनकालमें ऊनी वस्त्र व्यवहार करना अनुचित है, क्योंकि उससे सेवोपकरणोंमें लोम गिरनेकी सम्भावना रहती है।

तिलक–धारण—पवित्र आसनपर बैठकर पञ्चपात्रमें गङ्गाजल लेकर उसमें तुलसीपत्र देंगे। यह जल थोड़ा–सा बायें हाथकी हथेलीपर लेकर उसमें तुलसी–मृत्तिका घिसेङ्गे। गङ्गाजलके न रहने पर साधारण शुद्ध जलको पञ्चपात्रमें भरकर उसमें तुलसीपत्र देकर जल–स्पर्श करते हुए गङ्गा आदिका स्मरण करते–करते निम्नलिखित मन्त्रद्वारा तीर्थोंका आवाहन करेंगे—

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

उस जलमें गोपीचन्दन घिसकर एवं उससे केशवादि द्वादश मन्त्रोंसे ललाट आदि द्वादश अङ्गोंमें ऊर्द्ध्वपुण्ड्र या हरि–मन्दिरकी रचना करेंगे। ऊर्द्ध्वपुण्ड्रके बीचमें खाली स्थान होना चाहिए। भौंहोंके मूलसे नीचेकी ओर नासिकाके

तीन भागको नासामूल कहते हैं। नासामूलसे आरम्भ करके ललाटके ऊपर केशतक ऊर्ध्वपुण्ड्रकी रचना करेंगे। तिलक-रचनाकालमें द्वादश नाम स्मरण-मन्त्र इस प्रकार है—

ललाटे केशवं ध्यायेन्नारायणमथोदरे।
वक्षःस्थले माधवं तु गोविन्दं कण्ठकूपके॥
विष्णुञ्च दक्षिणे कुक्षौ, बाहौ च मधुसूदनम्।
त्रिविक्रमं कन्धरे तु वामनं वामपार्श्वके॥
श्रीधरं वामबाहौ तु हृषीकेशञ्च कन्धरे।
पृष्ठे तु पद्मनाभञ्च कट्यां दामोदरं न्यसेत्॥
तत् प्रक्षालनतोयन्तु वासुदेवाय मूर्द्धनि॥

उक्त श्लोकोंके अनुसार प्रत्येक अङ्ग स्पर्श करते हुए निम्नलिखित मन्त्रोंका उच्चारण करेंगे—

ललाटमें—**ॐ केशवाय नमः।**
उदर(पेट)में—**ॐ नारायणाय नमः।**
वक्षःस्थलमें—**ॐ माधवाय नमः।**
कण्ठमें—**ॐ गोविन्दाय नमः।**
दक्षिण पार्श्वमें—**ॐ विष्णवे नमः।**
दक्षिण भुजामें—**ॐ मधुसूदनाय नमः।**
दक्षिण स्कन्धमें—**ॐ त्रिविक्रमाय नमः।**
वाम (बाएँ) पार्श्वमें—**ॐ वामनाय नमः।**
बायीं भुजामें—**ॐ श्रीधराय नमः।**

बाएँ स्कन्धमें—**ॐ हृषीकेशाय नमः।**

पीठमें—**ॐ पद्मनाभाय नमः।**

कटि (कमर) में—**ॐ दामोदराय नमः।**

अन्तमें हाथ धोकर गोपीचन्दन मिश्रित जल **"ॐ वासुदेवाय नमः"** मन्त्र उच्चारण करते हुए मस्तकके ऊपर धारण करें।

आचमन

तिलक करनेके पश्चात् आचमन करें। साधारण और विशेष भेदसे वैष्णव–आचमन दो प्रकारके हैं। प्रत्येक अनुष्ठानके पहले साधारण आचमन करनेसे भी काम चल सकता है। किन्तु श्रीविग्रह आदिके स्नानादि और पूजाके समय विशेष आचमन ही करना चाहिए।

(क) **साधारण–आचमन**—दक्षिण हाथके मूलमें (जिसको ब्राह्म–तीर्थ कहते हैं) एक गण्डुष जल लेकर उसमेंसे थोड़ा–सा जल 'ॐ केशवाय नमः' उच्चारणपूर्वक पानकर अवशिष्टको भूमिपर छोड़ दें। पुनः हाथ धोकर उसी प्रकार जल लेकर 'ॐ नारायणाय नमः' एवं 'ॐ माधवाय नमः' उच्चारण करके आचमन करें।

(ख) **विशेष–आचमन**—हाथ धोकर दक्षिण हस्तके अङ्गुष्ठ मूलमें जल लेकर साधारण आचमन करेंगे। पश्चात् 'ॐ गोविन्दाय नमः', 'ॐ विष्णवे नमः' इन मन्त्रोंसे दोनों हाथ प्रक्षालन, 'ॐ मधुसूदनाय नमः', 'ॐ त्रिविक्रमाय नमः' मन्त्रोंसे मुख–मार्जन, 'ॐ वामनाय

नमः', 'ॐ श्रीधराय नमः', मन्त्रोंसे क्रमशः ऊर्द्ध्व ओष्ठ और अधःओष्ठ मार्जन, 'ॐ हृषीकेशाय नमः', मन्त्रसे पुनः हस्त-प्रक्षालन 'ॐ पद्मनाभाय नमः' मन्त्रसे दोनों पाद-प्रक्षालन, 'ॐ दामोदराय नमः' मन्त्रसे मस्तक-प्रक्षालन, 'ॐ वासुदेवाय नमः' मन्त्रसे मुख स्पर्श, 'ॐ संकर्षणाय नमः' मन्त्रसे अङ्गुष्ठद्वारा दक्षिण नासिका स्पर्श 'ॐ प्रद्युम्नाय नमः' मन्त्रसे अङ्गुष्ठद्वारा वाम नासिका स्पर्श, ॐ अनिरुद्धाय नमः' मन्त्रसे अङ्गुष्ठद्वारा दक्षिण नेत्र स्पर्श, 'ॐ पुरुषोत्तमाय नमः' मन्त्रसे अङ्गुष्ठ द्वारा वाम नेत्र स्पर्श, 'ॐ अधोक्षजाय नमः' मन्त्रसे अङ्गुष्ठद्वारा दक्षिण कर्ण स्पर्श, 'ॐ नृसिंहाय नमः' मन्त्रसे अङ्गुष्ठ द्वारा वाम कर्ण स्पर्श, 'ॐ अच्युताय नमः' मन्त्रसे नाभि स्पर्श, 'ॐ जनार्दनाय नमः' मन्त्रसे हृदय स्पर्श, 'ॐ उपेन्द्राय नमः' मन्त्रसे मस्तक स्पर्श, 'ॐ हरये नमः' मन्त्रसे दक्षिण भुजा स्पर्श, 'ॐ कृष्णाय नमः' मन्त्रसे वाम भुजा स्पर्श करेंगे तथा आचमनके अन्तमें निम्नलिखित मन्त्र पाठ करेंगे—"**ॐ तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम्।**"

असमर्थ होनेपर साधारण आचमनसे भी काम चल सकता है।

सन्ध्योपासना—इसके पश्चात् प्रातः सन्ध्या करें। सूर्योदयके २ दण्ड अर्थात् ४८ मिनट पूर्वसे सूर्यके अर्द्धोदय तक प्रातःसन्ध्या एवं सूर्यास्तसे नक्षत्रोदय तक सायं-सन्ध्याका समय होता है। सन्ध्याकृत्य पूर्वाभिमुख होकर करनी चाहिए।

श्रीभगवत्प्रबोधन—तत्पश्चात् भगवान्‌के मन्दिरमें जाकर किन्तु गर्भमन्दिरमें प्रवेश करनेसे पहले घण्टादि बजाते हुए श्रुतिस्तव (भा. १०.८७.१४–४१) अथवा निम्नलिखित प्रबोधनयोग्य स्तवद्वारा भगवानसे प्रार्थना करेंगे—

सोऽसावदभ्रकरुणो भगवान् विवृद्ध–
प्रेमस्मितेन नयनाम्बुरुहं विजृम्भन्।
उत्थाय विश्वविजयाय च नो विषादं
माध्व्या गिरापनयतात् पुरुषः पुराणः॥

देव प्रपन्नार्त्तिहर प्रसादं कुरु केशव।
अवलोकनदानेन भूयो मां पारयाच्युत॥

जय जय कृपामय जगतेर नाथ।
सर्व जगतेरे कर शुभ दृष्टिपात॥

यह प्रार्थना करते–करते तीन बार हाथसे ताली बजाकर मन्दिरमें प्रवेश करें। इसके पश्चात् तेलका दीपक जलाकर आसन पर बैठें। तत्पश्चात् साधारण आचमन कर घण्टा बजाते–बजाते शयन स्थानमें जाकर श्रीगुरुदेवके चरण स्पर्श कर **"उत्तिष्ठोत्तिष्ठ श्रीगुरो त्यज निद्रां कृपामय"** इस मन्त्रसे श्रीगुरुदेवको, श्रीगौराङ्गदेवके चरण स्पर्शकर **"उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गौराङ्ग जहि निद्रां महाप्रभो। शुभदृष्टि प्रदानेन त्रैलोक्यमङ्गलं कुरु॥"**—इस मन्त्रसे श्रीगौराङ्गदेवको एवं श्रीराधागोविन्दके चरण स्पर्शकर **"गो–गोप–गोकुलानन्द यशोदानन्दवर्द्धन। उत्तिष्ठ राधया सार्द्धं प्रातरासीज्जगत्पते॥"** इस मन्त्रसे श्रीराधागोविन्दको जगायेंगे। पश्चात् वे सिंहासनके ऊपर विराजमान हो गये हैं, ऐसी भावना करेंगे।

मुख–प्रक्षालन—इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रोंसे आचमन, दन्तकाष्ठ एवं पुनराचमन देंगे, यथा—

इदं आचमनीयं ऐं गुरवे नमः।
इदं आचमनीयं क्लीं गौराय नमः।
इदं आचमनीयं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः।
एष दन्तकाष्ठः ऐं गुरवे नमः।
एष दन्तकाष्ठः क्लीं गौराय नमः।
एष दन्तकाष्ठः श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः।

"इदं आचमनीयं" पूर्ववत् मन्त्रसे बारह बार ।

निर्माल्यापसारण—तत्पश्चात् श्रीविग्रहके श्रीमुख, हस्त और पदादि पोंछकर तुलसी व्यतीत बासी पुष्प और निर्माल्यादि हटाकर सिंहासनको साफ करेंगे। तत्पश्चात् हाथ धोकर मूलमन्त्रसे एक तुलसी अर्पणकर श्रीविग्रहोंको यथोचित मुकुट, वंशी, चन्द्रिकादि पहनाकर मङ्गल–आरती करें।

मङ्गलारात्रिक–विधि

आसन पर बैठकर आचमनकर घण्टा बजाते हुए प्रत्येक श्रीविग्रहको उनके मन्त्रोंसे पुष्पाञ्जलि प्रदान करनेके पश्चात् यथा क्रमसे (१) धूप, (२) दीप, (३) जलसहित शंख (४) वस्त्र, (५) पुष्प, (६) चामर एवं (७) पंखाद्वारा नीराजन करेंगे। नीराजनके प्रत्येक द्रव्यको मूलमन्त्रद्वारा क्रमानुसार निवेदन पूर्वक यथाक्रमसे हस्त–प्रक्षालनकर इन निवेदित द्रव्य–समूहोंसे नीराजन करेंगे। कार्त्तिक महीनेसे

शिवरात्रि तक पंखा व्यवहार नहीं करना चाहिए। लेकिन गर्मी अनुभव होनेपर पंखेसे हवा करनी चाहिए। मध्याह्न आरतीमें कर्पूरसे आरती करना अत्यन्त उत्तम है।

पहले धूप और दीप जलाकर मूलमन्त्रसे निवेदन पूर्वक क्रमशः नीराजन करेंगे। पञ्च–प्रदीपसे चरणकमलोंमें ४ बार, नाभि देशमें २ बार, श्रीमुखमण्डलमें ३ बार तथा सम्पूर्ण अङ्गोंमें ७ बार एवं शंख जल ३ बार भगवानके मस्तकके ऊपर घुमाना चाहिए। अन्यान्य द्रव्योंके घुमानेकी कोई निर्दिष्ट संख्या नहीं है। पुष्प केवल चरणोंके उद्देश्यसे ही घुमानेकी विधि है। धूपका पात्र भगवानके नाभिदेशसे ऊपर नहीं उठाना चाहिए। प्रसादी दीपकको तुलसी, गरुड़, देवता एवं भक्तोंके उद्देश्यसे घुमाना चाहिए।

आरति करनेके पश्चात् अर्चक गर्भमन्दिरसे बाहर आकर ३ बार दीर्घ शंखध्वनि करें। इसके पश्चात् श्रीगुरुगौराङ्ग राधाविनोदबिहारीजीकी एवं अन्यान्य जयध्वनि देकर ४ बार साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम करेंगे। भक्तगण परम श्रद्धाके साथ यह मङ्गल–नीराजन दर्शन करेंगे एवं इसी समय घण्टा, काँसर, मृदङ्ग, करताल आदि मधुर वाद्य–यन्त्रों द्वारा आरात्रिक–कीर्त्तन, पञ्चतत्त्व और महामन्त्र आदि कीर्त्तन करेंगे। अन्तमें श्रीमन्दिर और श्रीतुलसीकी ४ बार परिक्रमा करनी चाहिए।

बाल्य–भोग—इसके पश्चात् बाल्य–भोग इस विधिसे निवेदन करेंगे—

एषः पुष्पाञ्जलिः श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः।
इदं आसनं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः।
एतत् पाद्यं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः।
इदं आचमनीयं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः।
इदं मिष्टान्न–पानीयादिकम् श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः।

उक्त मन्त्रोंसे घण्टाध्वनिपूर्वक तुलसी–पत्रके साथ शंख–जलसे प्रत्येक नैवेद्य द्रव्यको निवेदन करेंगे। श्रीगुरुदेवको '**ऐं गुरवे नमः**' मन्त्रसे, श्रीगौरसुन्दरको '**क्लीं गौराय नमः**' मन्त्रसे निवेदन करना चाहिए। श्रीराधाकृष्णको एक साथ निवेदन किया जा सकता है या पहले कृष्णको '**क्लीं कृष्णाय नमः**' मन्त्रसे निवेदनकर उसी प्रसादको श्रीमती राधिकाको '**श्रीं राधिकायै नमः**' मन्त्रसे निवेदन किया जा सकता है। श्रीगुरुदेवको श्रीगौराङ्गका, श्रीकृष्णका या श्री राधाकृष्णका प्रसाद निवेदन किया जा सकता है। अथवा श्रीगुरुदेव अपने इष्टदेवको निवेदनकर प्रसाद पायेंगे, इस भावना द्वारा श्रीगुरुदेवको अनिवेदित द्रव्य भी निवेदन किया जा सकता है। विशेषकर पृथक् प्रकोष्ठमें या उनके समाधि–मन्दिरमें इस भावनासे अनिवेदित द्रव्य निवेदन करनेमें दोष नहीं है। भोगपात्रके ऊपर हाथ रखकर ८ बार मूलमन्त्र जप करेंगे, तत्पश्चात् १० बार गौर–गायत्री एवं १० बार काम–गायत्री जपकर कपाट बन्द करेंगे और बाहर आकर भोजनकाल तक प्रतीक्षाकर पुनः मन्दिरमें प्रवेशकर '**इदं आचमनीयं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः**' मन्त्रसे

आचमन निवेदन करें एवं **'इदं ताम्बूलं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'** मन्त्रसे ताम्बूल निवेदन करेंगे। पुनः उसी प्रसादको श्रीगुरुदेव और सभी सखियोंको यथाक्रमसे निम्नलिखित रूपसे निवेदन करेंगे—

इदं महाप्रसादं ऐं श्रीगुरवे नमः।
इदं महाप्रसादं ॐ सर्वसखिभ्यो नमः।
इदं महाप्रसादं ॐ पौर्णमास्यै नमः।
इदं महाप्रसादं ॐ तुलस्यै नमः।
इदं महाप्रसादं ॐ सर्ववैष्णवेभ्यो नमः।
इदं महाप्रसादं ॐ सर्ववैष्णवीभ्यो नमः।

मन्दिरादि–मार्जन—बाल्य–भोगके बाद श्रीभगवन्नाम–कीर्त्तन द्वारा दास्य भावसे यथोचित शुद्ध गोमय मृत्तिका अथवा जलद्वारा श्रीभगवत्मन्दिर मार्जन करेंगे। तत्पश्चात् श्रीभगवानकी सेवाके पात्र आदि साफ करेंगे।

पुष्प और तुलसी–चयन—इसके बाद श्रीभगवानको प्रणाम कर उनसे कृपा भिक्षाकर पूजाके लिए पुष्प और तुलसी विधि अनुसार चयन करें। बिना स्नान किये तुलसी–चयन करना निषिद्ध है। प्रातः स्नानकर तुलसी और पुष्प चयन करना सर्वोत्तम है। लेकिन पहले पुष्प चयनकर स्नान करनेके बाद भी तुलसी चयन की जा सकती है। प्रातः स्नानकर पुष्प–चयन निषिद्ध नहीं है। स्नान करनेमें असमर्थ होनेपर शुद्ध वस्त्र पहनकर एवं मन्त्र–स्नानकर पवित्र भावनासे पुष्प और तुलसी–चयन करना चाहिए।

श्रीभगवानके अर्चनमें सफेद और सुगन्धित पुष्प प्रशस्त हैं। शुष्क, पर्युषित (बासी), दलित, जमीनमें गिरे हुए, कीटयुक्त, केशदूषित, कलिकावस्थावाले, गन्धहीन, तीव्र गन्धवाले, अप्रोक्षित, सूँघे हुए, निवेदित और श्मशानादि अपवित्र स्थानोंसे लाये गये पुष्प भगवानकी सेवाके लिए अनुपयुक्त हैं। पुष्पोंके अभावमें पुष्पोंकी भावनाकर तुलसी या जल निवेदन करेंगे। पुष्पोंको जलसे नहीं धोना चाहिए। चन्दन या गङ्गाजल छिड़ककर पुष्पशुद्धि–मन्त्रद्वारा पुष्पको शुद्धकर भगवानके अर्चनके लिए व्यवहार करना चाहिए। पुष्पशुद्धि मन्त्र यह है—

पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे।
पुष्पचयावकीर्णे च हुँ फट् स्वाहा॥

तुलसीके सम्बन्धमें विशेष ज्ञातव्य—स्नान एवं आह्निक कर तुलसीको स्नान कराकर मन्त्रसहित प्रणामकर चयनमन्त्र उच्चारण करते–करते दाहिने हाथसे डंठलयुक्त एक–एक तुलसी पत्र या कोमल मञ्जरी सावधानीसे चयन करनी चाहिए, जिससे तुलसी देवीको किसी प्रकारका कष्ट न हो। चयनके बाद क्षमा प्रार्थना–मन्त्र पाठ करेंगे। अन्य लोगोंके लिए अन्यान्य दिन तुलसी–पत्र–चयन करना निषिद्ध होनेपर भी शुद्ध वैष्णवोंके लिए केवल द्वादशीके दिन तुलसी–चयन निषिद्ध है। पहले दिन चयन की हुई या बहुत दिन पहले चयन की हुई, यहाँ तक कि शुष्क, अनिवेदित तुलसीपत्र द्वारा भी पूजा करनेकी विधि है। श्रीगुरुदेवके चरणोंमें तुलसी नहीं देनी चाहिए।

तुलसी–प्रणाम–मन्त्र

ॐ वृन्दायै तुलसीदेव्यै प्रियायै केशवस्य च।
कृष्णभक्तिप्रदे देवि सत्यवत्यै नमो नमः॥

तुलसी–स्नान–मन्त्र

ॐ गोविन्दवल्लभां देवीं भक्तचैतन्यकारिणीम्।
स्नापयामि जगद्धात्रीं कृष्णभक्ति–प्रदायिनीम्॥

तुलसी–चयन–मन्त्र

ॐ तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया।
केशवार्थे चिनोमि त्वं वरदा भव शोभने॥

अपराध–क्षमा–प्रार्थना–मन्त्र

चयनोद्भवदुःखञ्च यद् हृदि तव वर्त्तते।
तत् क्षमस्व जगन्मातः वृन्दादेवि नमोऽस्तु ते॥

पूर्वाह्न–कृत्य

पूजाके प्रारम्भिक कृत्य–समूह

श्रीश्रीगुरुदेवके आदेशसे श्रीश्रीगुरु–गौराङ्ग–राधाविनोदबिहारी–जीकी जय देकर साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणामकर पूजाके लिए मन्दिरमें प्रवेश करें एवं निम्नलिखित प्रकारसे आसन–शुद्धि करें।

आसन–शुद्धि—पहले आसन बिछाकर हस्त प्रक्षालन कर साधारण आचमन करें। इसके पश्चात् '**ॐ आसन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः**' पाठकर '**ॐ आधारशक्तये नमः, ॐ अनन्ताय नमः, ॐ कूर्माय नमः**' कहकर पूजा करेंगे और आसनपर हाथ रखकर—

पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वञ्च धारय मां नित्यं पवित्रञ्चासनं कुरु॥

उक्त मन्त्रका पाठकर आसनपर जल छिड़क कर सुगन्धित पुष्प प्रदान करेंगे।

पात्रादि–स्थापन—तत्पश्चात् आसनके ऊपर स्वस्तिकासन या पद्मासनमें बैठकर अर्चनके पात्रादि स्थापन करें। श्रीविग्रहके सन्मुख और अर्चकके सामने स्नान–पात्र–समूह, श्रीविग्रहके सामने आचमन–पात्र, पूजकके सामने बायीं ओर क्रमशः त्रिपदीके ऊपर शंख आधारसहित घण्टा, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय–मधुपर्कका पात्र, आधारके ऊपर

धूप, वाद्य–शंख जलका कलश या घड़ा; पूजकके सामने दाहिनी ओर क्रमशः (शंखके दाहिनी ओर एक ही पंक्तिमें) पञ्चपात्र, आधारके ऊपर दीप, चन्दन–पुष्प–तुलसीपत्र एवं अपने हाथ धोनेका पात्र और अन्यान्य उपकरण सहज ग्रहणयोग्य स्थानपर स्थापन करें।

प्रत्येक पात्रके स्थापनसे पूर्व उस–उस स्थानमें जलद्वारा एक त्रिकोण अङ्कनकर 'ॐ अस्त्राय फट्' मन्त्रसे उस पात्रको धोकर स्थापन करें।

तुलसी पत्रोंको धोकर पात्रमें रखें। फूलोंको जलद्वारा नहीं धोना चाहिए। पूर्व लिखित पुष्पशुद्धि–मन्त्रसे उन्हें शुद्ध कर लें। गङ्गाजलके अभावमें पूर्व लिखित तीर्थावाहन मन्त्रसे साधारण जलको शुद्ध कर लेंगे। गङ्गाजल रहनेपर उक्त मन्त्र पाठ करनेकी आवश्यकता नहीं है।

पञ्चपात्रमें जल–स्थापन—भूमिपर जलद्वारा त्रिकोण बनाकर 'ॐ अस्त्राय फट्' मन्त्रसे पञ्चपात्र एवं कुशी (चम्मच) को धोयेंगे। 'ॐ आधारशक्तये नमः' मन्त्रसे त्रिकोणके ऊपर कुशी सहित पञ्चपात्र–स्थापन, 'ॐ हृदयाय नमः' मन्त्रसे पञ्चपात्रमें पुष्प प्रदान, 'ॐ शिरसे स्वाहा' मन्त्रसे पञ्चपात्रको जलपूर्ण करेंगे तथा 'ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' मन्त्रसे गन्ध पुष्पद्वारा पञ्चपात्रकी और 'ॐ उं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' मन्त्रसे पञ्चपात्रमें स्थित जलकी पूजा करेंगे। इसके बाद तीर्थ–आवाहन–मन्त्रसे उस जलमें सभी तीर्थोंका आवाहन

कर एवं उस जलको स्पर्श करते हुए हाथसे ढककर आठ बार मूलमन्त्र जप करेंगे।

शंख–स्तुति

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृत करे।
मानित सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते॥
तव नादेन जीमूता वित्रस्यन्ति सुरासुराः।
शशाङ्कयुतदीप्ताभ पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते॥
गर्भा देवारिनारीणां विलयन्ते सहस्रधा।
तव नादेन पाताले पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते॥

शंख–माहात्म्य

दक्षिणावर्त्त शंखमें गायका दूध, आतप (अरवा) चावल और पुष्प देकर अथवा इसके अभावमें केवल जलद्वारा श्रीनारायण-शिलाका स्नान कराना चाहिए। स्नानकालमें शंखध्वनि करनेसे वे बहुत प्रसन्न होते हैं। पुरुषसूक्तमन्त्र पाठ कर स्नान कराना उत्तम है। असमर्थ होनेपर "इदं स्नानीयोदकं ॐ नमो नारायणाय नमः" मन्त्रसे स्नान करानेसे भी चल सकता है। शंखस्थित समस्त जल ही गङ्गा जलके समान होता है।

शंख–स्थापन

पूजकके सन्मुख बाँयीं ओर भूमिपर त्रिकोण बनाकर 'ॐ अस्त्राय फट्' मन्त्रसे त्रिपदीको धोकर 'ॐ आधारशक्तये

नमः’ मन्त्रसे इस त्रिपदीको त्रिकोणके ऊपर स्थापन करेंगे। पुनः ‘ॐ अस्त्राय फट्’ मन्त्रसे शंखको धोकर त्रिपदीके ऊपर स्थापन करेंगे। ‘ॐ हृदयाय नमः’ मन्त्रसे शंखमें गन्ध, पुष्प और तुलसी प्रदान करें। ‘ॐ शिरसे स्वाहा’ मन्त्रसे शंखको जलसे पूर्ण करें। ‘ॐ मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः’ मन्त्रद्वारा गन्ध–तुलसी–पुष्पसे त्रिपदीकी, ‘ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः’ मन्त्रद्वारा गन्ध–तुलसी–पुष्पसे शंखकी, ‘ॐ उं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः’ मन्त्रद्वारा तुलसी–पुष्पसे शंखस्थ जलकी पूजा करें। इसके पश्चात् तीर्थ–आवाहन मन्त्रका पाठकर अंकुश–मुद्राद्वारा शंखजलमें सभी तीर्थोंका आवाहन कर तथा शंखजल स्पर्श एवं आच्छादन कर मूलमन्त्र ८ बार जप करें। इसके बाद शंखसे थोड़ा–सा जल प्रोक्षणी–पात्रमें डालकर बचे हुए जलको पूजाके द्रव्योंपर और अपनी देहपर ३ बार छिड़कें। तत्पश्चात् शंखमें बचे हुए जलको डाबर (विसर्जनीय पात्र) में डालकर ‘ॐ शिरसे स्वाहा’ मन्त्रसे शंखको जलसे पूर्ण कर सामने रखेंगे।

घण्टा–शुद्धि–मन्त्र

सर्ववाद्यमयि घण्टे देववदेवस्य वल्लभे।
त्वां विना नैव सर्वेषां शुभं भवति शोभने॥

घण्टा–स्थापन—यथास्थानपर जलद्वारा त्रिकोण बनाकर ’ॐ अस्त्राय फट्’ मन्त्रसे आधारसहित घण्टाको धोकर

'ॐ आधारशक्तये नमः' मन्त्रसे त्रिकोणपर स्थापन करें और 'ॐ जयध्वनि मन्त्रमात्रे स्वाहा' मन्त्रसे गन्ध–पुष्पद्वारा पूजा करें।

धूपदान–मन्त्र

वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

दीपदान–मन्त्र

स्वप्रकाशो महातेजाः सर्वतस्तिमिरापहः।
स बाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

इस मन्त्रको पाठ करनेके पश्चात् 'ॐ नमः दीपेश्वराय' मन्त्रसे दीपके ऊपर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

पाद्यके द्रव्य—दूर्वा, श्यामा धान, तुलसी।

अर्घ्य द्रव्य—(क) जल, दूध, कुशाग्र, दही, आतप (अरवा) चावल, तिल, जौ, सफेद सरसों आदि। (ख) संक्षेपमें—गन्ध, पुष्प और जल। श्रीविष्णु–तत्त्वके लिए इन तीनोंके साथ तुलसी भी रखें।

मधुपर्क—घृत (घी), मधु (शहद) और चीनी। कुछ लोगोंके अनुसार इन तीनोंके साथ दही और दूध आदि मिलाकर उन पाँचोंके मिश्रणको भी मधुपर्क कहते हैं।

आचमनीय—जायफल, लवङ्ग और ककोला।

पञ्चामृत—दही, दूध, घी, मधु और चीनी।

घीके अभावमें लाज (खै), मधुके अभावमें गुड़,

दधिके अभावमें दूध एवं सभी वस्तुओंके अभावमें उस–उस वस्तुकी भावना कर पुष्प या तुलसी देंगे। उसके भी अभावमें केवल जल द्वारा सभी अभावोंकी पूर्त्ति कर पूजा करें। प्रत्येक पात्रके ऊपर ८ बार मूल मन्त्र जप कर चक्र मुद्रा द्वारा रक्षा करें। पञ्चामृतमें स्नान कराने पर "पञ्चामृत शोधन–मन्त्र" शीर्षकमें लिखित मन्त्रसमूह पाठ कर उन्हें शोधन कर स्नान कराना चाहिए।

गन्ध—चन्दन, कर्पूर, अगुरु—ये तीनों वस्तुएँ विशेष परिमाणमें मिश्रित हों।

पूजोपचार—काल और अवस्थाके अनुसार षोडश, द्वादश, दश अथवा पञ्चोपचारसे भगवानकी पूजा की जा सकती है।

(१) **षोडशोपचार**—आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क, स्नान, वस्त्र, उपवीत, भूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, और नैवेद्य, माल्य या वन्दना।

(२) **द्वादशोपचार**—आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क, स्नान, वस्त्र, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

(३) **दशोपचार**—आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

(४) **पञ्चोपचार**—गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

भूत–शुद्धि—पूजासे पहले भूत–शुद्धि करनी चाहिए। "मैं स्वरूपतः नित्य कृष्णदास हूँ, किन्तु दुर्भाग्यसे कृष्ण–विमुख होकर अनादि कालसे देहमें आत्मबुद्धिकर मायाके संसारमें

पुनः–पुनः जन्ममरणके चक्रमें भ्रमण करते–करते त्रितापरूपी अग्निमें जला जा रहा था। किसी सौभाग्यसे इस समय श्रीगुरुकृपासे मैं यह समझ पाया हूँ कि मैं स्थूल–लिंग शरीरसे सम्पूर्ण पृथक् अणु चित्तत्त्व नित्य कृष्णदास हूँ। अब श्रीगुरुदेवकी आज्ञासे उनके ही आनुगत्यमें मुझे श्रीश्रीगुरुगौराङ्ग–राधाविनोदबिहारीजीकी सेवाका सौभाग्य प्राप्त हुआ है।" अन्तःकरणमें इस प्रकारकी भावनाकर निम्नलिखित मन्त्रको पाठ करते हुए आत्मध्यान करेंगे। मन्त्र—

नाहं विप्रो न च नरपतिर्नापि वैश्यो न शूद्रो
नाहं वर्णी न च गृहपतिर्नो वनस्थो यतिर्वा।
किन्तु प्रोद्यन्निखिलपरमानन्दपूर्णामृताब्धे–
र्गोपीभर्त्तुः पदकमलयोर्दास–दासानुदासः॥

अर्थात् मैं ब्राह्मण, राजा (क्षत्रिय), वैश्य या शूद्र नहीं हूँ अथवा मैं ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी या संन्यासी भी नहीं हूँ। परन्तु मैं स्थूल शरीर एवं सूक्ष्म शरीरसे अतीत सबके आश्रय निखिल परमानन्द एवं पूर्णामृत सागरस्वरूप गोपीपति श्रीकृष्णके चरणकमलोंका दास–दासानुदास हूँ।

आत्मध्यान–मन्त्र

दिव्यं श्रीहरिमन्दिराढ्य तिलकं कण्ठं सुमालान्वितं
वक्षः श्रीहरिनामवर्णसुभगं श्रीखण्डलिप्तं पुनः।
पूतं सूक्ष्मं नवाम्बरं विमलतां नित्यं वहन्तीं तनुं
ध्यायेत् श्रीगुरुपादपद्म निकटे सेवोत्सुकाञ्चात्मनः॥

अर्थात् श्रीहरिमन्दिर समुज्ज्वल दिव्य तिलक, सुन्दर माला शोभित कण्ठ, श्रीहरिनामाक्षरद्वारा सुन्दर एवं चन्दनलिप्त वक्षःस्थल, सूक्ष्म–पवित्र–नवीन वस्त्र एवं नित्य पवित्र भाव—ये सभी धारणपूर्वक सेवाकार्यमें आग्रहयुक्त अपनी देहको श्रीगुरुपादपद्मके निकट अवस्थित रूपमें ध्यान करें।

श्रीगुरु–पूजा

"चिन्मय श्रीनवद्वीपधामके अन्तर्गत श्रीमायापुर–योगपीठमें रत्नमञ्चके ऊपर श्रीगौरसुन्दर बैठे हुए हैं। उनके दाहिनी ओर श्रीनित्यानन्द प्रभु, बाईं ओर श्रीगदाधर, सामने हाथ जोड़कर श्रीअद्वैत प्रभु और छत्र धारण किये हुए श्रीनिवास पण्डित खड़े हुए हैं"—इस प्रकार भावनाकर उनको अपनी योग्यतानुसार षोडश, द्वादश, दश या पञ्चोपचारसे पूजा करेंगे।

श्रीगुरु–वर्गको प्रणाम—सिंहासनके ऊपर श्रीभगवानके बायीं ओर अपने गुरु–वर्गको प्रणाम करें। यथा—ऐं गुरवे नमः, ऐं परमगुरवे नमः, ऐं परमेष्टि गुरवे नमः, ऐं श्रीगुरु–परम्परायै नमः, ॐ सर्वगुरूत्तमाय श्रीकृष्णचैतन्याय नमः आदि।

श्रीगुरुदेवका ध्यान–मन्त्र

प्रातः श्रीमन्नवद्वीपे द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुम्।
वराभयप्रदं शान्तं स्मरेत् तन्नामपूर्वकम्॥

अर्थात् प्रातःकालमें श्रीनवद्वीप या श्रीवृन्दावनधाममें विराजमान दोनों नेत्र एवं दोनों भुजायुक्त, वराभय देनेवाले शान्तमूर्त्ति श्रीगुरुदेवका नामोच्चारणपूर्वक स्मरण करें।

यह मन्त्र पाठकर अपने श्रीगुरुदेवका नाम उच्चारण कर ३ बार उनकी जय देंगे। जैसे—

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्ति- प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजीकी जय।

पहले उनकी मानस–पूजा करनी चाहिए। तत्पश्चात् उनकी कृपा प्रार्थनाकर दीक्षाकालमें प्राप्त गुरुमन्त्रद्वारा बाहरी उपचारोंसे उनकी पूजा करें। श्रीगुरुदेवको आवाहन कर स्नानपात्रमें उन्हें स्नान करा रहा हूँ—ऐसी भावनाकर उनके लिए आसन, पाद्य आदि निवेदन करें। जैसे—

इदं आसनं ऐं गुरवे नमः—स्नानपात्रमें आसनके उद्देश्यसे सचन्दन पुष्प प्रदान करें।

प्रभो! कृपया स्वागतं कुरु, ऐं गुरवे नमः—हाथ जोड़कर स्नानपात्रमें स्थित आसनपर उनका आवाहन।

एतत् पाद्यं ऐं गुरवे नमः—कुशद्वारा स्नानपात्रमें उनके श्रीचरणोंमें जल प्रदान करें।

इदं अर्घ्यं ऐं गुरवे नमः—स्नानपात्रमें अर्घ्य (गन्ध, पुष्प, जल) प्रदान करें।

इदं आचमनीयं ऐं गुरवे नमः—विसर्जनीय पात्रमें जल छोड़ें।

एष मधुपर्कः ऐं गुरवे नमः—स्नानपात्रमें मधुपर्क प्रदान करें।

इदं आचमनीयं ऐं गुरवे नमः—विसर्जनीय पात्रमें जल छोड़ें।

इसके पश्चात् भावनाद्वारा श्रीगुरुदेवके श्रीअङ्गमें तैल मर्दन कर—

इदं स्नानीयं ऐं गुरवे नमः—सुवासित शंखजलसे घण्टा बजाते हुए स्तवपाठ करते हुए स्नानपात्रमें उन्हें स्नान करायें।

इदं सोत्तरीय–वस्त्र ऐं गुरवे नमः—विसर्जनीय पात्रमें दो वस्त्रोंकी भावना कर दो पुष्प प्रदान करें।

इदं आचमनीयं ऐं गुरवे नमः—विसर्जनीय पात्रमें जल प्रदान करें।

तत्पश्चात् श्रीगुरुदेव सिंहासनपर अपने स्थानपर बैठे हुए हैं, ऐसी भावनाकर उनके श्रीचरणकमलोंका स्पर्श कर ८ बार श्रीगुरु मन्त्रका जप करेंगे। इसको प्रसाधन कहते हैं।

इदं उपवीतं ऐं गुरवे नमः—श्रीगुरुदेवको उपवीत या उसके अभावमें पुष्प प्रदान करें।

इदं तिलकं ऐं गुरवे नमः—श्रीगुरुदेवके ऊर्द्ध्वपुण्ड्र रचना करें।

इदं आभरणं ऐं गुरवे नमः—श्रीगुरुदेवको आभरणकी भावना कर पुष्प दें।

एष गन्धः ऐं गुरवे नमः—श्रीगुरुदेवके श्रीचरणोंमें गन्ध अर्पण करें।

इदं सगन्धपुष्पं ऐं गुरवे नमः—उनके श्रीचरणोंमें सचन्दन पुष्प दें।

एतत् तुलसी पत्रं ऐं गुरवे नमः—उनके दाँये हाथमें तुलसी प्रदान करें।

एषः धूपः ऐं गुरवे नमः—विसर्जनीय पात्रमें जल प्रदान करें।

एषः दीपः ऐं गुरवे नमः—विसर्जनीय पात्रमें जल प्रदान करें।

इसके पीछे आसन, पाद्य और आचमन पूर्वकी भाँति निवेदन करें।

इदं नैवेद्यं ऐं गुरवे नमः—नैवेद्य पात्रमें शंखजल सहित तुलसी अर्पण करें।

इदं पानीयं ऐं गुरवे नमः—पानीयपात्रमें शंखजल सहित तुलसी अर्पण करें।

इदं आचमनीयं ऐं गुरवे नमः—विसर्जनीय पात्रमें जल प्रदान करें।

तत्पश्चात् श्रीगुरुदेव सिंहासनपर अपने स्थानपर सुखपूर्वक बैठे हुए हैं, ऐसी भावना कर—

इदं ताम्बूलं ऐं गुरवे नमः—ताम्बूल या उसके अभावमें पुष्प अर्पण करें।

इदं माल्यं ऐं गुरवे नमः—पुष्प माला पहनायें।

इदं सर्वं ऐं गुरवे नमः—उनके श्रीचरणोंमें पुष्प अर्पण करें।

तत्पश्चात् श्रीगुरुगायत्री १० बार जप कर उनकी स्तुति कर उन्हें प्रणाम करें।

स्तुति

त्वं गोपिका वृषरवेस्तनयान्तिकेऽसि
सेवाधिकारिणि गुरो निजपादपद्मे।
दास्यं प्रदाय कुरु मां व्रजकानने श्री–
राधांघ्रि–सेवनरसे सुखिनीं सुखाब्धौ॥

प्रणाम

ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन–शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
राधासम्मुखसंसक्तिं सखीसङ्गनिवासिनीम्।
त्वामहं सततं वन्दे माधवाश्रय–विग्रहम्॥

नामश्रेष्ठं मनुमपि शचीपुत्रमत्र स्वरूपं
रूपं तस्याग्रजमुरुपुरीं माथुरीं गोष्ठवाटीम्।
राधाकुण्डं गिरिवरमहो राधिकामाधवाशां
प्राप्तो यस्य प्रथितकृपया श्रीगुरुं तं नतोऽस्मि॥
मां मदीयञ्च सकलं श्रीगुरवे समर्पयामि॥

वैष्णव–प्रणाम

वाञ्छाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः॥

महामन्त्र

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

श्रीशालग्राम–मूर्त्तिका अर्चन

श्रीशालग्राम या अन्य शिलामूर्त्ति रहनेपर श्रीगुरुपूजाके पीछे श्रीपुरुषसूक्त–मन्त्र पाठ करके घण्टा और शंखध्वनि सहित सुवासित शंखजल द्वारा या विशेष–समयमें पञ्चामृतद्वारा (पञ्चामृत द्वारा स्नान–विधि आगे बतलायी जायेगी) स्नान करानेकी विधि है। जिन मूर्त्तियोंको जल आदिसे स्नान करानेमें असुविधा हो, उन्हें मानसिक स्नान कराना चाहिए। स्नान कराते समय बाँये हाथसे कभी भी श्रीमूर्त्तिका स्पर्श नहीं करना चाहिए।

श्रीगौराङ्ग–पूजा

तत्पश्चात् श्रीगुरुदेवकी कृपा–भिक्षा कर पञ्चतत्त्वात्मक श्रीगौराङ्गका अर्चन करेंगे। पहले श्रीनवद्वीपका ध्यान करेंगे।

श्रीनवद्वीपका ध्यान

स्वर्धुन्याश्चारुतीरे स्फुरितमतिबृहत् कूर्मपृष्ठाभगात्रं
रम्यारामावृतं सन्मणि–कनक–महासद्मसंघैः परीतम्।
नित्यं प्रत्यलयोद्यत्–प्रणयभरलसत्–कृष्णसंकीर्त्तनाढ्यं।
श्रीवृन्दाटव्यभिन्नं त्रिजगदनुपमं श्रीनवद्वीपमीड़े॥

पुनः श्रीनवद्वीपधामके अन्तर्गत श्रीमायापुर योगपीठमें रत्नवेदीके ऊपर श्रीमन्महाप्रभुका ध्यान करेंगे। यथा–

श्रीगौर–ध्यानमन्त्र

श्रीमन्मौक्तिकदामबद्धचिकुरं सुस्मेरचन्द्राननं
श्रीखण्डागुरुचारुचित्रवसनं स्रग्दिव्यभूषाञ्चितम्।
नृत्यावेशरसानुमोदमधुरं कन्दर्पवेशोज्ज्वलं
चैतन्यं कनकद्युतिं निजजनैः संसेव्यमानं भजे॥

अर्थात् सुन्दर मोतियोंके हारद्वारा जिनका चिकुर (केशपाश) गुँथा हुआ है, जिनका श्रीमुखमण्डल प्रकाशमान चन्द्रके समान शोभित है, चन्दन–अगुरु–विचित्र वस्त्र मण्डित एवं माला तथा दिव्य अलङ्कारोंसे जिनका श्रीअङ्ग शोभित है, नृत्यावेशजनित रसानन्दसे मधुर, कन्दर्प वेशमें समुज्ज्वल, निजजनों द्वारा संसेवित कनक कान्तिविशिष्ट श्रीचैतन्यदेवकी वन्दना करता हूँ।

जयदान—श्रीकृष्णचैतन्य–प्रभु नित्यानन्द, श्रीअद्वैत–गदाधर–श्रीवासादि श्रीगौरभक्तवृन्दकी जय।

श्रीगुरुपूजाकी तरह पहले मानस–पूजा करनेके बाद बाहरी उपचारोंसे श्रीगुरुपादपद्मसे प्राप्त श्रीगौरमन्त्रद्वारा श्रीमूर्त्ति या श्रीशालग्राम शिलामें श्रीगौराङ्गकी पूजा करेंगे। श्रीगौराङ्गदेवका यथास्थानमें आवाहनकर स्नान करा रहा हूँ—ऐसी भावना करेंगे।

'इदं आसनं क्लीं गौराय स्वाहा'—स्नानपात्रमें आसनार्थ सचन्दन पुष्प प्रदान करें।

'प्रभो! कृपया स्वागतं कुरु, क्लीं गौराय स्वाहा'—हाथ जोड़कर स्नानपात्रमें स्थित आसनपर श्रीमन्महाप्रभुजीका आवाहन करें।

'इदं अर्घ्यं क्लीं गौराय स्वाहा'—स्नानपात्रमें अर्घ्य प्रदान करें।

'इदं आचमनीयं क्लीं गौराय स्वाहा'—विसर्जनीय पात्रमें जल छोड़ें।

'एषः मधुपर्कः क्लीं गौराय स्वाहा'—स्नानपात्रमें मधुपर्क प्रदान करें।

'इदं आचमनीयं क्लीं गौराय स्वाहा'—विसर्जनीय पात्रमें जल प्रदान करें।

इसके बाद भावनाद्वारा श्रीमन्महाप्रभुके श्रीअङ्गमें तेल लगाकर—

'इदं स्नानीयं क्लीं गौराय स्वाहा'—सुवासित शंख जलसे घण्टा बजाते हुए स्तव पाठ करते हुए स्नान करायें।

'इदं सोत्तरीय-वस्त्रं क्लीं गौराय स्वाहा'—विसर्जनीय पात्रमें भावना कर दो पुष्प अर्पण करें।

'इदं आचमनीयं क्लीं गौराय स्वाहा'—विसर्जनीय पात्रमें जल प्रदान।

इसके बाद श्रीमन्महाप्रभु सिंहासनपर अपने स्थानपर सुखसे बैठे हैं—ऐसी भावना कर उनके श्रीचरणोंका स्पर्श कर ८ बार श्रीगौरमन्त्र जप करेंगे। पुनः—

'इदं उपवीतं क्लीं गौराय स्वाहा'—श्रीगौरसुन्दरको उपवीत अथवा उपवीतके अभावमें पुष्प अर्पण करें।

'इदं तिलकं क्लीं गौराय स्वाहा'—श्रीमूर्त्तिके ऊर्द्ध्वपुण्ड्र रचना करें।

'इदं आभरणं क्लीं गौराय स्वाहा'—आभरणकी भावना कर पुष्प अर्पण करें।

'एष गन्धः क्लीं गौराय स्वाहा'—श्रीमूर्तिके चरणोंमें गन्ध अर्पण करें।

'इदं सगन्धं पुष्पं क्लीं गौराय स्वाहा'—श्रीचरणोंमें सचन्दन पुष्प दान करें।

'एतत् तुलसीपत्रं क्लीं गौराय स्वाहा'—श्रीचरणोंमें सचन्दन तुलसी अर्पण करें।

'इदम् आचमनीयं क्लीं गौराय स्वाहा'—विसर्जनीय पात्रमें जल अर्पण करें।

इसके बाद श्रीमन्महाप्रभु सिंहासनपर सुखसे बैठ गये हैं—ऐसी भावना कर—

'इदं ताम्बूलं क्लीं गौराय स्वाहा'—ताम्बूल अथवा ताम्बूलके अभावमें पुष्प अर्पण करेंगे।

'इदं सर्वं क्लीं गौराय स्वाहा'—श्रीचरणोंमें पुष्प अर्पण करें।

इस प्रकार पूजा कर दस बार श्रीगौरगायत्री जप करके स्तुति और प्रणाम करें—

स्तुति

ध्येयं सदा परिभवघ्नं अभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिवविरिञ्चिनुतं शरण्यम्।

भृत्यार्त्तिहं प्रणतपालं भवाब्धिपोतं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥
त्यक्त्वा सुदुस्त्यज–सुरेप्सित राज्यलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम्।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावद्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥
पञ्चतत्त्वात्मकं कृष्णं भक्तरूपस्वरूपकम्।
भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तशक्तिकम्॥

प्रणाम

आनन्दलीलामयविग्रहाय हेमाभदिव्यच्छविसुन्दराय।
तस्मै महाप्रेमरसप्रदाय चैतन्यचन्द्राय नमो नमस्ते॥
नमो महावदान्याय कृष्णप्रेमप्रदाय ते।
कृष्णाय कृष्णचैतन्यनाम्ने गौरत्विषे नमः॥

पञ्चतत्व

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द।
श्री अद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द॥

महामन्त्र

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

श्रीश्रीराधाकृष्णका अर्चन

श्रीश्रीगुरुगौराङ्गकी आज्ञा एवं कृपा भिक्षाकर श्रीश्रीराधा-कृष्णका अर्चन करें। श्रीगुरुदेव श्रीश्रीराधाकृष्णके अन्तरङ्ग सेवक तथा अन्तरङ्ग सखी हैं। वे ही श्रीश्रीराधाकृष्णकी साक्षात् रूपसे सेवा कर रहे हैं—ऐसी भावनाकर अपनी अयोग्यताको स्मरण करते हुए अर्चन करें। पहले श्रीवृन्दावनका ध्यान करेंगे।

श्रीवृन्दावनका ध्यान

ततो वृन्दावनं ध्यायेत् परमानन्दवर्द्धनम्।
कालिन्दीजलकल्लोलसङ्गि मारुतसेवितम्॥
नानापुष्प लताबद्ध वृक्षषण्डैश्च मण्डितम्।
कोटिसूर्यसमाभासं विमुक्तं षट्तरङ्गकैः॥
तन्मध्ये रत्नखचितं स्वर्णसिंहासनं महत्॥

अर्थात् परमानन्दवर्द्धन, यमुनाजीकी तरङ्गके संस्पर्शसे शीतल हुए पवन द्वारा सेवित, नाना प्रकारकी पुष्पलताओंसे वेष्टित, वृक्षोंद्वारा शोभित, कोटि सूर्यकी तरह समुज्ज्वल एवं छह प्रकारकी तरङ्गोंसे रहित श्रीवृन्दावन एवं उसके मध्यमें रत्नखचित स्वर्ण सिंहासनका ध्यान करें।

श्रीश्रीराधाकृष्णका ध्यान

दीव्यद् वृन्दारण्यकल्पद्रुमाधः श्रीमद्रत्नागारसिंहासनस्थौ।
श्रीश्रीराधा-श्रील-गोविन्ददेवौ प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि॥१॥

सत्पुण्डरीकनयनं मेघाभं वैद्युताम्बरम्।
द्विभुजं वेणुवक्त्राब्जं वनमालिनमीश्वरम्॥२॥
दिव्यालङ्करणोपेतं सखीभिः परिवेष्टितम्।
चिदानन्दघनं कृष्णं राधालिङ्गितविग्रहम्॥३॥
श्रीकृष्णं श्रीघनश्यामं पूर्णानन्दकलेवरम्।
द्विभुजं सर्वदेवेशं राधालिङ्गितविग्रहम्॥४॥

अर्थात् उज्ज्वल शोभायुक्त श्रीवृन्दावनमें कल्पवृक्षके नीचे सुन्दर रत्नमन्दिरमें सिंहासनपर विराजमान सखियोंद्वारा सेवित श्रीराधागोविन्दका स्मरण करता हूँ॥१॥

(उस रत्नसिंहासन पर विराजमान) सुन्दर नयनकमलवाले मेघकान्तियुक्त, पीताम्बरधारी, द्विभुज, मुरलीवदन, वनमालाधारी, दिव्य अलङ्कारोंसे शोभित, सखियोंद्वारा परिवेष्टित, श्रीकृष्णजीका ध्यान करता हूँ॥२–३॥

नवीन मेघके समान श्याम वर्णवाले, परिपूर्णतम आनन्दसे पूरित कलेवरयुक्त, द्विभुजधारी, समस्त देवताओंके ईश्वर स्वरूप एवं श्रीराधाजीद्वारा आलिङ्गित विग्रह श्रीकृष्णका ध्यान करता हूँ॥४॥

तत्पश्चात् श्रीश्रीगान्धर्विका–गिरिधारी–श्रीश्रीराधाविनोदबिहारी–जीकी तीन बार जय देंगे।

मानसपूजाके बाद बाहरी उपचारोंसे श्रीमूर्त्तिमें अथवा शालग्राममें युगलमूर्त्तिका अर्चन करें। श्रीगौर–अर्चनकी तरह श्रीराधाकृष्णकी पूजामें श्रीगुरुदेवसे प्राप्त मूलमन्त्रद्वारा पूजा करेंगे। श्रीश्रीराधाकृष्णका यथास्थानमें आवाहनकर

स्नान करा रहा हूँ—ऐसी भावनाकर निम्नलिखित मन्त्रोंद्वारा अर्चन करें—

'इदं आसनं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'— स्नान-पात्रमें आसनके लिए पुष्प अर्पण करें।

'कृपया स्वागतं कुरुत देवौ, श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—हाथ जोड़कर स्नान-पात्रमें आसनपर श्रीराधाकृष्णका आवाहन करें।

'एतत् पाद्यं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—स्नान-पात्रमें श्रीचरणोंमें जल अर्पण करें।

'इदं अर्घ्यं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः—स्नान पात्रमें अर्घ्य प्रदान करें।

'इदं आचमनीयं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—विसर्जनीय पात्रमें जल अर्पण करें।

'एष मधुपर्कः श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—स्नान पात्रमें मधुपर्क अर्पण करें।

'इदं आचमनीयं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—विसर्जनीय पात्रमें जल प्रदान करें।

तत्पश्चात् भावनाद्वारा श्रीश्रीराधाकृष्णके श्रीअङ्गोंमें सुगन्धित तेल लगाकर—

'इदं स्नानीयं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—सुवासित शंखजलसे, घण्टा बजाते हुए और स्तव पाठ करते हुए स्नान करायेंगे। (स्नान कराकर वस्त्रद्वारा उनका अङ्गमार्जन करें।)

'इमे सोत्तरीये वस्त्रे श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—विसर्जनीय पात्रमें वस्त्रोंकी भावनासे २ पुष्प अर्पण करें।

'इदं आचमनीयं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—विसर्जनीय पात्रमें जल अर्पण करें।

तत्पश्चात् श्रीकृष्ण और श्रीराधिकाके चरणोंका क्रमशः स्पर्शकर ८ बार मूलमन्त्र (श्रीकृष्णमन्त्र तथा श्रीराधामन्त्र) जप करें।

'इदं उपवीतं क्लीं कृष्णाय नमः'—कृष्णको उपवीतके अभावमें पुष्पदान करें।

'इदं तिलकं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—श्रीमूर्त्तिके ऊर्द्ध्वपुण्ड्र रचना करनेकी भावनासे तुलसीपत्र द्वारा अर्चनपात्रमें चन्दन अर्पण करें।

'इमानि आभरणानि श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः—आभरणोंकी भावनाकर पुष्प प्रदान करें।

'एष गन्धः श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—श्रीमूर्त्तिके श्रीचरणोंमें चन्दन अर्पण करें।

'इदं सगन्धं पुष्पं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः—श्रीचरणोंमें सचन्दन पुष्प दो बार अर्पण करें।

'एतत् तुलसीपत्रं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—श्रीकृष्णके श्रीचरणोंमें और श्रीराधिकाजीके हाथमें तुलसीपत्र अर्पण करें।

'एष धूपः श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—विसर्जनीय पात्रमें जल अर्पण करें।

'एष दीपः श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—विसर्जनीय पात्रमें जल अर्पण करें।

तत्पश्चात् आसन, पाद्य, आचमनादि पूर्ववत् निवेदन कर—'इदं नैवेद्यं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः—नैवेद्य पात्रमें शंखजल और तुलसी अर्पण करें।

'इदं पानीयं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—पानीय पात्रमें शंखजल सहित तुलसी अर्पण करें।

'इदं आचमनीयं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—विसर्जनीय पात्रमें जल अर्पण करें।

तत्पश्चात् श्रीश्रीराधाकृष्ण सिंहासनपर सुखसे बैठे हुए हैं, ऐसी भावना कर—

'इदं ताम्बूलं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—ताम्बूल अथवा ताम्बूलके अभावमें पुष्प अर्पण करें।

'इदं माल्यं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—श्रीविग्रहको पुष्पमाला पहनायेंगे, पुष्प मालाके अभावमें पुष्प अर्पण करें।

'इदं सर्वं श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः'—श्रीचरणोंमें पुष्प प्रदान करें।

तत्पश्चात् १० बार क्रमशः मूल-मन्त्र और काम गायत्री एवं १० बार श्रीराधागायत्री जप करें।

श्रीराधामन्त्र—'रां राधायै नमः'।

श्रीराधागायत्री—'रां राधिकायै विद्महे प्रेमरूपायै धीमहि तन्नो राधा प्रचोदयात्'।

प्रणाम

हे कृष्ण करुणासिन्धो दीनबन्धो जगत्पते।
गोपेश गोपिकाकान्त राधाकान्त नमोऽस्तुते॥
तप्तकाञ्चन गौराङ्गि राधे वृन्दावनेश्वरि।
वृषभानुसुते देवि प्रणमामि हरिप्रिये॥
महाभावस्वरूपा त्वं कृष्णप्रियावरीयसी।
प्रेमभक्तिप्रदे देवि राधिके त्वां नमाम्यहम्॥

तत्पश्चात् पद्यपञ्चक और विज्ञप्ति–पञ्चक यथाक्रमसे पाठ करें।

पद्यपञ्चक

संसार सागरान्नाथ पुत्रमित्रगृहाङ्गनात्।
गोप्तारौ मे युवामेव प्रपन्नभयभञ्जनौ॥
योऽहं ममास्ति यत्किंचिदिह लोके परत्र च।
तत्सर्वं भवतोऽद्यैव चरणेषु समर्पितम्॥
अहमप्यपराधानामालयस्त्यक्त–साधनः।
अगतिश्च ततो नाथौ भवन्तौ मे परा गतिः॥
तवास्मि राधिकानाथ कर्मणा मनसा गिरा।
कृष्णकान्ते तवैवास्मि युवामेव गतिर्मम॥
शरणं वां प्रपन्नोऽस्मि करुणानिकराकरौ।
प्रसादं कुरु दास्यं भो मयि दुष्टेऽपराधिनि॥

विज्ञप्ति–पञ्चक

मत्समो नास्ति पापात्मा नापराधी च कश्चन।
परिहारेऽपि लज्जा मे किं ब्रुवे पुरुषोत्तम॥

युवतीनां यथा यूनि यूनाञ्च युवतौ यथा।
मनोऽभिरमते तद्वत् मनो मे रमतां त्वयि॥
भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम्।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं प्रभो॥
गोविन्दवल्लभे राधे प्रार्थये त्वामहं सदा।
त्वदीयमिति जानातु गोविन्दो मां त्वया सह॥
राधे वृन्दावनाधीशे करुणामृतवाहिनि।
कृपया निजपादाब्जदास्यं मह्यं प्रदीयताम्॥

उपाङ्गपूजा

एते गन्धपुष्पे ॐ श्रीमुखवेणवे नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ वक्षसि वनमालायै नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ दक्षस्तनोर्द्ध्वे श्रीवत्साय नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ सव्यस्तनोर्द्ध्वे कौस्तुभाय नमः।

तत्पश्चात् श्रीगुरुवैष्णवोंको निर्माल्यादि अर्पण करें—

इदं महाप्रसाद–निर्माल्यादिकं ऐं श्रीगुरवे नमः।
इदं पानीयं ऐं श्रीगुरवे नमः।
इदं आचमनीयं ऐं श्रीगुरवे नमः।
इदं सर्वं ॐ सर्वसखीभ्यो नमः।
इदं सर्वं ॐ सर्ववैष्णवेभ्यो नमः।
इदं सर्वं ॐ श्रीपौर्णमास्यै नमः।
इदं सर्वं ॐ सर्वव्रजवासिभ्यो नमः।

श्रीतुलसी–पूजा

तत्पश्चात् श्रीमन्दिरमें सिंहासनके बाँयीं ओर स्थित श्रीतुलसीदेवीकी पूजा करें।

प्रार्थना—

निर्मिता त्वं पुरा देवैः अर्चिता त्वं सुरासुरैः।
तुलसी हर मेऽविद्यां पूजां गृह्ण नमोऽस्तु ते॥

स्नान–मन्त्र—

ॐ गोविन्दवल्लभां देवीं भक्तचैतन्यकारिणीम्।
स्नापयामि जगद्धात्रीं कृष्णभक्तिप्रदायिनीम्॥

अर्घ्य–मन्त्र—

श्रियः श्रियेः श्रियावासे नित्यं श्रीधरं सत्कृते।
भक्त्या दत्तं मया देवि अर्घ्यं गृह्ण नमो ऽस्तु ते॥

पूजा–मन्त्र—

एते गन्धपुष्पे ॐ तुलस्यै नमः।
इदं श्रीकृष्णचरणामृतं ॐ तुलस्यै नमः।
इदं महाप्रसाद–निर्माल्यादिकं सर्वं ॐ तुलस्यै नमः।
इदं आचमनीयं ॐ तुलस्यै नमः।

प्रणाम—

ॐ वृन्दायै तुलसीदेव्यै प्रियायै केशवस्य च।
कृष्णभक्ति प्रदे देवि सत्यवत्यै नमो नमः॥

स्तुति—

महाप्रसाद–जननी–सर्वसौभाग्यवर्द्धिनी।
आधिव्याधिहरा नित्यं तुलसी त्वं नमोऽस्तु ते॥

तत्पश्चात् बाहर आकर ३ बार जोरसे शंख बजाकर, ठाकुरजीकी जय देकर ४ बार साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम करें। तत्पश्चात् श्रीगुरु–गौराङ्ग–राधाकृष्णका चरणामृत पानकर निर्माल्य मस्तकपर धारण करें।

चरणामृतपान–मन्त्र

साधारण–मन्त्र—

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विष्णोः पादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्॥

श्रीगुरुदेवका—

अशेष–क्लेशनिःशेषकारणं शुद्धभक्तिदम्।
गुरोः पादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्॥

श्रीगौराङ्गका—

अशेष–क्लेशनिःशेषकारणं शुद्धभक्तिदम्।
गौर–पादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्॥

श्रीश्रीराधाकृष्णका—

श्रीराधाकृष्ण–पादोदकं–प्रेमभक्तिदं मुदा।
भक्तिभरेण वै पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्॥

श्रीनित्यानन्दार्चन

मन्त्र—

ॐ नित्यानन्दाय नमः।

ध्यान—

(ॐ) विद्युद्दाम–मदाभिमर्दन–रुचिं विस्तीर्ण–वक्षस्थलं
प्रेमोद्घूर्णित–लोचनाञ्चल–लसत् स्मेराभिरम्याननम्।
नानाभूषणभूषितं सुमधुरं विभ्रद्घनाभाम्बरं
सर्वानन्दकरं परं प्रवरनित्यानन्दचन्द्रं भजे॥

प्रणाम–मन्त्र—

सङ्कर्षणः कारणतोयशायी गर्भोदशायी च पयोब्धिशायी।
शेषश्च यस्यांशकलाः स नित्यानन्दाख्यरामः शरणं ममास्तु॥

श्रीगौराङ्ग–पूजाकी तरह ही पहले कहे गये मन्त्रों द्वारा सभी द्रव्य श्रीनित्यानन्द प्रभुको निवेदन करें।

श्रीवराहदेवका अर्चन

ध्यान—

आपादं जानुदेशाद्वरकनकनिभं नाभिदेशादधस्ता–
न्मुक्ताभं–कण्ठदेशात्तरुणरविनिभं मस्तकान्नीलभासम्।
ईड़े हस्तैर्दधानं रथचरणोदरौ खड्गखेटौ गदाख्यं
शक्तिं दानाभये च क्षितिधरणलसद्दंष्ट्रमाद्यं वराहम्॥

मन्त्र—ॐ नमो भगवते वराहरूपाय।

उक्त मन्त्रसे श्रीगौराङ्गदेवके अर्चनकी तरह श्रीवराहदेवका अर्चन करें।

मध्याह्न भोग और आरती

बाल्य–भोग, मध्याह्न–भोग, अपराह्नका शीतल–भोग एवं रात्रिकालीन भोग–सभी भोग निवेदन करनेकी विधि एक ही प्रकारकी है। मध्याह्न–भोग और आरती दिनमें दोपहर तक हो जानी चाहिए। श्रीकृष्ण या श्रीराधाकृष्ण, श्रीगौराङ्ग और गुरुदेवको अलग–अलग पात्रोंमें भोग देना चाहिए। असमर्थ होनेपर केवल एक ही भोगपात्रसे भी काम चल सकता है। अलग–अलग प्रकोष्ठ रहनेपर अलग–अलग भोगपात्र रखना आवश्यक है।

भोग निवेदन करनेसे पहले श्रीविग्रहके चूड़ा (मुकुट), वंशी आदि उतारकर रख देने चाहिए। भोगके प्रत्येक द्रव्यके ऊपर तुलसी पत्र देना चाहिए। पहले श्रीगौराङ्गको फिर श्रीराधाकृष्णको, फिर गुरुदेवको भोग निवेदन करना चाहिए। श्रीराधाकृष्णको एकसाथ भोग निवेदन न करने पर श्रीकृष्णका प्रसाद सबसे पहले श्रीराधाको निवेदन करना पड़ेगा। श्रीगुरुदेव ही श्रीमन्महाप्रभुको अथवा श्रीश्रीराधाकृष्णको खिला रहे हैं–ऐसी भावना कर भोग निवेदन करना चाहिए।

एषः पुष्पाञ्जलिः क्लीं कृष्णाय नमः।

इदं आसनं क्लीं कृष्णाय नमः—आसनपर पुष्पादि अर्पण करें।

एतत् पाद्यं क्लीं कृष्णाय नमः—विसर्जनीय पात्रमें जल प्रदान करें।

इदं आचमनीयं क्लीं कृष्णाय नमः—विसर्जनीय पात्रमें जल प्रदान करें।

इदं अन्न–व्यञ्जन–पानीयादिकं सर्वं क्लीं कृष्णाय नमः— ऐसा कहकर घण्टा बजाते हुए तुलसीपत्रद्वारा शंखजलसे प्रत्येक द्रव्य निवेदन करेंगे। अथवा 'एषः पुष्पाञ्जलिः श्रीं क्लीं राधाकृष्णाभ्यां नमः' आदि मन्त्रसे राधाकृष्णको एकसाथ भी निवेदन कर सकते हैं।

सभी द्रव्य निवेदन करके बाहर आकर श्रीकृष्णके भोजनकाल तक प्रतीक्षा करेंगे और निम्नलिखित भोग–आरती कीर्त्तन करें।

भोग–आरती–कीर्त्तन

भज भकत–वत्सल श्रीगौरहरि।
श्रीगौरहरि सोहि गोष्ठविहारी।
श्रीनन्द–यशोमति–चित्तहारी॥
बेला हल दामोदर, आइस एखन।
भोग मन्दिरे बसि, करह भोजन॥
नन्देर निदेशे बैसे गिरिवरधारी।
बलदेव सह सखा बैसे सारि सारि॥
शुकता–शाकादि भाजि नालिता कुष्माण्ड।
डालि डालना दुग्धतुम्बी दधि मोचाखण्ड॥
मुद्गबड़ा माषबड़ा रोटिका घृतान्न।
शष्कुली पिष्टक क्षीर पुलिपायसान्न॥
कर्पूर अमृतकेलि रम्भा क्षीरसार।
अमृत रसाल अम्ल द्वादश प्रकार॥

लुचि चिनि सरपुरी लाड्डु रसावली।
भोजन करेन कृष्ण हये कुतूहली॥
राधिकार पक्व अन्न विविध व्यञ्जन।
परम आनन्दे कृष्ण करेन भोजन॥
छले बले लाड्डु खाय श्रीमधुमङ्गल।
बगल बाजाय आर देय हरिबोल॥
राधिकादि गणे हेरि नयनेर कोणे।
तृप्त हये खाय कृष्ण यशोदा—भवने॥

इसके बाद तीन बार ताली बजाकर मन्दिरके भीतर जाकर आचमनीय और ताम्बूल निवेदनकर (पूजा करते समयका नैवेद्य निवेदन द्रष्टव्य है) पुनः बाहर आकर यह कीर्त्तन करेंगे—

भोजनान्ते पिये कृष्ण सुवासित वारि।
सबे मुख प्रक्षालय हये सारि सारि॥
हस्तमुख प्रक्षालिया जत सखा गणे।
आनन्दे विश्राम करे बलदेव सने॥
जाम्बुल रसाल आने ताम्बूल मसाला।
ताहा खेये कृष्णचन्द्र सुखे निद्रा गेला॥
विशालाक्ष शिखिपुच्छ चामर ढुलाय।
अपूर्व शय्याय कृष्ण सुखे निद्रा जाय॥
यशोमती—आज्ञा पेये धनिष्ठा आनीत।
श्रीकृष्णप्रसाद राधा भुञ्जे हये प्रीत॥
ललितादि सखीगण अवशेष पाय।
मने—मने सुखे राधाकृष्ण गुण गाय॥

हरिलीला एकमात्र जाहार प्रमोद।
भोगारति गाय सेइ भकति विनोद॥

तत्पश्चात् ३ बार ताली बजाकर पुनः भीतर जाकर श्रीकृष्णका प्रसाद सर्वप्रथम श्रीमती राधिकाको निवेदन करनेके पश्चात् श्रीगुरुदेव, सर्वसखीगण, सर्ववैष्णवगण, श्रीपौर्णमासी एवं सर्व ब्रजवासियोंको प्रसाद एवं निर्माल्य (उपाङ्गपूजामें लिखे गये निर्माल्य निवेदन देखें) निवेदन करें।

भोग होनेके बाद श्रीविग्रहोंको चूड़ा, वंशी और अलङ्कारादि पहनाकर यथारीति भोग–आरती करें। भोग आरतीकी विधि मङ्गल आरतीमें लिखी हुई है।

श्रीभगवानका शयन—आरतीके बाद श्रीविग्रहके चूड़ा, वंशी आदि उतारकर भगवानसे पलङ्गपर शयन करनेके लिए प्रार्थना करें।

यथा—

आगच्छ शयनस्थानं प्रियाभिः सह केशव।
दिव्य पुष्पाढ्य–शय्यायां सुखं विहर माधव॥

तत्पश्चात् श्रीगुरुदेवको शयनस्थानमें निम्नलिखत मन्त्रसे आवाहन करेंगे—

'आगच्छ विश्रामस्थानं स्वगणैः सह श्रीगुरो।'

तत्पश्चात् यथाक्रमसे सुवासित पानीय, सकर्पूर ताम्बूल, माला और पुष्पाञ्जलि आदि निवेदनकर दण्डवत् प्रणाम कर मन्दिरके द्वार बन्द करें।

श्रीश्रीगुरुगौराङ्ग–राधाकृष्णको शयन करानेके पश्चात् श्रीमहाप्रसादको नमस्कारकर और उनका माहात्म्य कीर्त्तन कर श्रीनामसंकीर्त्तन एवं जयध्वनि करते हुए उनका सम्मान करेंगे। प्रसाद सेवाके पश्चात् वैष्णवोंके सङ्गमें इष्ट–गोष्ठी, भक्तिशास्त्रोंका अनुशीलन और संख्यापूर्वक हरिनाम ग्रहण करें।

अपराह्न–कृत्य

ऊषाकालकी प्रबोधन–विधिके अनुसार श्रीविग्रहोंको जगाकर सुशीतल सुवासित पानीय और थोड़ा–सा भोग–निवेदन कर उत्तम शृङ्गारकर मन्दिरके द्वार दर्शनके लिए खोल देंगे।

सायं–कृत्य

सन्ध्या–कालमें विधिपूर्वक सन्ध्या करके भक्तिपूर्वक श्रीगुरु–गौराङ्ग–राधाविनोदबिहारीजीकी सन्ध्या–आरती करेंगे। यह मध्याह्नभोग आरतीकी तरह ही होगी। आरती करनेके बाद भक्तिग्रन्थ पाठ और कीर्त्तनादि अवश्य करना चाहिए।

रात्रि–कृत्य

रात्रिके पहले पहरके भीतर ही श्रीभगवानको भोग देकर शयन–आरती कर शयन देंगे। शयन देनेकी विधि दोपहरकी तरह ही है। तत्पश्चात् श्रीमहाप्रसादका सम्मान कर श्रीनाम–ग्रहणकर विश्राम करेंगे।

पञ्चामृत–शोधन–मन्त्र

श्रीजन्माष्टमी, श्रीफाल्गुनी–पूर्णिमा आदि विशेष तिथियोंमें श्रीविग्रहोंका या श्रीशालग्रामका पञ्चामृतसे स्नान करानेके लिए पहले पञ्चामृतके प्रत्येक द्रव्यको निम्नलिखित मन्त्रोंसे अवश्य शोधन कर लेना चाहिए—

दूध—ॐ पयः पृथिव्यां पय औषधीषु पयो दीव्यन्तरीक्षे पयोधाः पयस्वती प्रदिशः सन्तु मह्यम्।

दही—ॐ दधिक्राव्न अकार्षं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभिनो मुखोकरोत् प्राण आयुंषि तारिषत्।

घी—ॐ घृतं घृतपावना पिबत वसां वसा पावना पिवतान्तरीक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।

चीनी—ॐ अपां रसं उद्वयसं सूर्ये सन्तं समाहितं अपां रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णामि उत्तममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय ते जुष्टतमम्।

मधु (शहद)—ॐ मधु बाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः मधु द्यौरस्तु नः पिता मधुमान् नो वनस्पतिः मधुमानस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः। ॐ मधु ॐ मधु ॐ मधु।

श्रीपुरुषसूक्त–मन्त्रसे भगवत्पूजा–विधि

(१) ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥
॥इति आसनम्॥

(२) ॐ पुरुष एवेदं सर्व यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उत्तामृतत्वस्येशानो यद् अन्नेनातिरोहति॥
॥इति स्वागतम्॥

(३) ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायांश्च पुरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपाद् अस्यामृतं दिवि॥
॥इति पाद्यम्॥

(४) ॐ त्रिपाद–ऊर्द्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विश्वङ् व्यक्रामत साशनाऽनशने अभि॥
॥इति अर्घ्यम्॥

(५) ॐ तस्मात् विराड् अजायत विराजो अधिपुरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥
॥इति आचमनीयम्॥

(६) ॐ तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यान् आरण्या ग्राम्याश्च ये॥
॥इति मधुपर्क॥

(७) ॐ तस्मात् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्तस्माद् अजायत॥
॥इति स्नानम्॥

(८) ॐ तस्माद् अश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो हि जज्ञिरे तस्मात् तस्मात् जाता अजा वयः॥
॥इति वस्त्रम्॥

(९) ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥
॥इति यज्ञसूत्रम्॥

(१०) ॐ यत् पुरुषः व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किं अस्य कौ बाहु का ऊरु–पादा उच्येते॥
॥इति अलङ्कारः॥

(११) ॐ ब्राह्मणोऽस्यः मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरुः तद् अस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत॥
॥इति गन्धः॥

(१२) ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखाद् इन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत॥
॥इति पुष्पम्॥

(१३) ॐ नाभ्या आसीद् अन्तरीक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकां अकल्पयन्॥
॥इति धूपः॥

(१४) ॐ यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञं अतन्वत।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म शरद् हविः॥
॥इति दीपः॥

(१५) ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद् यज्ञं तन्वाना अवध्नन् पुरुषं पशुम्॥
॥इति नैवेद्यम्॥

(१६) ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्ति देवाः॥
॥इति नमस्कारः॥

(१) हिरण्यगर्भ (ब्रह्माण्डके अन्तर्यामी) पुरुष द्वितीय पुरुषावतार सहस्र (अनन्त) मस्तकविशिष्ट हैं, सहस्र नयन एवं सहस्र चरणविशिष्ट हैं। ये समग्र ब्रह्माण्डमें व्याप्त एवं दशांगुल पुरुष (जीव हृदयमें वर्त्तमान प्रादेशमात्र अन्तर्यामी पुरुष) को अतिक्रम कर विराजमान हैं।

(२) अतीत, वर्त्तमान, भविष्यत्—समग्र ब्रह्माण्ड या विश्वके पुरुष ही हैं या इस पुरुषके प्रकाश हैं, किन्तु पुरुष स्वयं अमृतत्वके अधीश्वर हैं। वह अमृतत्व (नित्यत्व) अन्नके द्वारा वर्द्धमान जड़ एवं अनित्य सत्तासे अतीत हैं एवं उसके विनाश होने पर भी विद्यमान हैं।

(३) इस पुरुषकी महिमा या विभूति इतनी है कि समग्र भूतजगत इनकी विभूतिका एक चतुर्थांश मात्र एवं नश्वर है। इनकी विभूतिका और तीन भाग अमृत या नित्य एवं दिव्यधाम (मायातीत) वैकुण्ठमें वर्त्तमान है। फिर भी ये पुरुष स्वयं इन सभी विभूतियोंसे महान् हैं।

(४) ऊर्द्ध्वमें अर्थात् परव्योमकी त्रिपादविभूतिके प्रकाशके सहित वे पुरुष वैकुण्ठमें नित्य वर्त्तमान हैं। इस भूत व्योम या जड़ जगतमें उनकी एकपाद विभूति पुनः पुनः प्रकाशित होती है। उसमें वे साशन अशन सहित अर्थात् नित्य अमृत जगत और अनशन (अशन रहित) अर्थात्

अनित्य मर जगत्—इन दोनों जगतमें व्याप्त होकर सब प्रकारसे विक्रम प्रकाश किये हुए हैं।

(५) उन पुरुषसे विराट् रूपका (पुरुषका स्थूलदेह रूप विश्वका) प्रकाश है। सहस्रशीर्षा पुरुष इस विराटदेहके अधिष्ठाता हैं। यह प्रकाशित विश्वरूप पूर्व एवं पश्चात् ब्रह्माण्डको अतिक्रम किये हुए हैं अर्थात् समग्र ब्रह्माण्डके पूर्व पश्चात् इस प्रकाशित विराट रूप (विश्वरूप) के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

(६) ये पुरुष सभीके यजनीय द्रव्यमय यज्ञस्वरूप हैं। इन यज्ञरूप पुरुषसे सर्वत्र वर्षणशील आज्य समुत्पन्न है अर्थात् सर्वत्र अवस्थित भोग्यजात वस्तुएँ उनसे प्राप्त होती हैं। ग्राम्य, आरण्य और आन्तरिक (वायव्य) सभी जीवोंको उन्होंने उत्पन्न किया है।

(७) सर्वजनोपास्य यज्ञरूप पुरुषसे ऋक्, साम्, यजुः, अथर्व आदि सभी वेद उत्पन्न हुए हैं।

(८) उनसे सभी अश्व दो दन्तपंक्ति विशिष्ट सभी प्राणी, सभी तरहकी गौएँ, अजा (बकरियाँ) और सभी तरहके पक्षी समुत्पन्न हुए हैं।

(९) सर्वप्रथम प्रकटित उन यज्ञरूपी पुरुषको याज्ञिक लोगोंने (प्रसारित यज्ञीय) कुशके ऊपर प्रोक्षित किया है। उस यज्ञरूपी पुरुषके (यज्ञ पुरुष) द्वारा अर्थात् उस पुरुषके यज्ञरूप होनेसे देवता साध्यगण एवं ऋषी लोग, यज्ञ करनेमें समर्थ हुए हैं।

(१०) तत्त्वदर्शी योगीलोगोंने पुरुषके स्थूलरूपकी (विराट रूप) जैसी धारणा की है, उसमें पुरुषके अङ्ग–प्रत्यङ्गकी कितने प्रकारसे (किस प्रकारसे) कल्पना की है? अर्थात् पुरुषके विराट रूपकी कल्पना किस प्रकार है? किसे इनका मुख, बाहु (हाथ), ऊरु (जांघ) और चरण कहा जाय?

(११) योगी लोगोंने ब्राह्मणको इनका मुख, क्षत्रियको इनका बाहु बतलाया है। जो वैश्य हैं, वे इनके ऊरु या जांघ हैं। इनके दोनों पादसे शूद्र उत्पन्न हुए हैं।

(१२) इनके मनसे चन्द्र, आँखोंसे सूर्यदेव, मुखसे देवराज इन्द्र और अग्नि एवं प्राणसे वायु देवता उत्पन्न हुए।

(१३) इनकी नाभिसे अन्तरीक्ष (भुवर्लोक) उत्पन्न हुआ, मस्तकसे स्वर्ग (स्वर्ग लोक) प्रकाशित हुआ, पदयुगलसे भूमि (भूलोक) एवं श्रोत्र अर्थात् श्रवणेन्द्रियसे सभी दिशायें उत्पन्न हुईं। इस प्रकार इनके द्वारा सभी लोकोंकी (चौदह भुवनों) योगियोंने कल्पना की थी।

(१४) देवताओंने जिस हवि (यज्ञीय द्रव्य सामग्री) रूप पुरुषके द्वारा यज्ञ सम्पादन किया था, उसमें वसन्त ऋतु आज्य या घृत, ग्रीष्म ऋतु काष्ठ या समिधा एवं शरत् ऋतु हविः या हवनीय द्रव्य हुआ था।

(१५) देवताओंने जिस यज्ञका विस्तार (अनुष्ठान) कर पुरुषको रज्जु आदिके द्वारा आबद्ध किसी पशुकी तरह आबद्ध किया था, उस यज्ञकी सात परिधि या सीमा

(गायत्री आदिके सात छन्द) एवं एकविंशति (इक्कीस) समिधकी व्यवस्था है।

(१६) देवताओंने यज्ञके द्वारा यज्ञपुरुषका यजन (उपासना) किया था। वे सभी अनुष्ठान लोगोंका प्राथमिक (मुख्य) धर्म है। पुरुषके (गर्भोदशायी विष्णु) की महिमा स्वरूप वे सभी देवता लोग जहाँ पूर्वतन साध्यगण वर्त्तमान हैं, उस स्वर्गमें समवेत हैं अर्थात् वास करते हैं अथवा उस स्वर्गकी सेवा करते हैं।

अपराध–क्षमापनमन्त्र

ॐ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥
यद्दत्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
आवेदितं निवेद्यन्तु तद् गृहाणानुकम्पया॥
विधिहीनं मन्त्रहीनं यत्किंचिदुपादितम्।
क्रियामन्त्रविहीनंवा तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि॥
अज्ञानादथवा ज्ञानादशुभं यन्मया कृतम्।
क्षन्तुमर्हसि तत्सर्वं दास्येनैव गृहाण माम्॥
स्थितिः सेवा गतिर्यात्रा स्मृतिश्चिन्ता स्तुतिर्वचः।
भूयात् सर्वात्मना विष्णो मदीयं त्वयि चेष्टितम्॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽहमिति मां मत्वा क्षमस्व मधुसूदन॥
प्रतिज्ञा तव गोविन्द न मे भक्तः प्रणश्यति।
इति संस्मृत्य संस्मृत्य प्राणान् संधारयाम्यहम्॥

विशेष जानने योग्य बातें

१—मङ्गल आरतीसे पहले रात्रिमें पहने हुए वस्त्रोंको उतारकर दूसरे शुद्ध वस्त्र पहनने चाहिए।

२—श्रीभगवानके शयन होनेपर या अन्य समयमें प्रदीपका कार्य समाप्त होनेपर उसे बुझाना अनुचित है। प्रदीपको एकबार व्यवहार करनेपर पुनः धोकर व्यवहार करना चाहिए, क्योंकि अर्चनकालमें प्रदीप श्रीभगवानको अर्पण किया जाता है।

३—शंख बजाकर उसको आचमन-पात्रमें नहीं धोना चाहिए, उसको मन्दिरके बाहर अन्य पात्रमें धोना चाहिए, क्योंकि शंख बजाने पर उसमें मुखकी लार लगनेसे वह अपवित्र हो जाता है।

४—मलमूत्र त्याग करनेके बाद जलसे पवित्र होकर मन्दिरमें प्रवेश करना चाहिए।

५—दूसरे देवताके ऊपर धारण कराये गये, माथेके ऊपर धारण किये गये, निम्न वस्त्रमें लाये गये तथा अन्तर्जलमें धोये गये पुष्पोंद्वारा श्रीहरिकी पूजा नहीं होती।

६—श्रीकृष्ण-मन्त्रसे दीक्षित न होनेपर भगवानकी पूजा करनेका अधिकार नहीं होता।

७—ऊर्द्ध्वपुण्ड्र धारण नहीं करनेसे जप, होम, तपः स्वाध्याय, पितृतर्पण, श्राद्धादि समस्त क्रियाएँ निष्फल होती हैं। वैष्णवोंको प्रतिदिन ऊर्द्ध्वपुण्ड्र अवश्य धारण करना चाहिए। उर्द्ध्वपुण्ड्र धारण करने वाले व्यक्तिकी जिस

किसी भी स्थानपर मृत्यु क्यों न हो, वह चाण्डाल होने पर भी वैकुण्ठमें जाता है। ऊर्द्ध्वपुण्ड्रधारी व्यक्ति जिसके घरमें महाप्रसाद सेवन करता है, श्रीभगवान उसकी बीस पीढ़ियोंका नरकसे उद्धार करते हैं।

उर्द्ध्वपुण्ड्रका परिमाण—दस अङ्गुल लम्बा ऊर्द्ध्वपुण्ड्र अति उत्तम, नौ अङ्गुलका मध्यम एवं आठ अङ्गुलका कनिष्ठ है। नाकके तीसरे भागसे लेकर ललाटके अन्त तक तिलक धारण करना चाहिए। अनामिका द्वारा तिलक रचना करनेसे वाञ्छित फल मिलता है। मध्यमा आयुवृद्धिकारी, तर्जनी मुक्तिदायिनी एवं अंगूठा पुष्टिकारक है।

प्रणाम-विधि—

स्ववामे प्रणमेद्विष्णुं दक्षिणे गौरीशङ्करौ।
गुरुरग्रे प्रणम्येत अन्यथा निष्फलो भवेत्॥

अर्थात् श्रीविष्णुको अपने बायें करके, गौरीशङ्करको दायें करके एवं गुरुदेवको सामनेसे प्रणाम करना चाहिए।

अपराध

भक्ति-साधक, विशेषरूपसे श्रीविग्रह अर्चनकारी व्यक्ति सेवापराध एवं नामापराधका सब प्रकारसे परित्याग करेंगे। जिससे ये अपराध न हों, इस विषयमें सब समय सावधान रहना चाहिए।

सेवापराध

आगमोंमें कहे गये सेवापराध—(१) पालकी आदि यान-वाहन द्वारा या पादुका (जूते-चप्पल आदि) पहनकर

मन्दिरमें जाना, (२) भगवानकी प्रीतिके लिए उनके जन्मादि यात्रा-महोत्सव न करना। श्रीविग्रहके सामने—(३) प्रणाम न करना, (४) एक हाथसे प्रणाम करना, (५) परिक्रमा करना, (६) पैर फैलाना, (७) हाथद्वारा घुटनोंको बाँधकर बैठना, (८) सोना, (९) भोजन करना, (१०) झूठ बोलना, (११) जोर-जोरसे बातें करना, (१२) हरि-कथा छोड़कर दूसरी बातें करना, (१३) रोना, (१४) कलह करना, (१५) किसीके ऊपर शासन करना या अनुग्रह करना, (१६) किसीके प्रति कठोर वचन बोलना, (१७) निन्दा करना, (१८) दूसरोंकी प्रशंसा करना, (१९) अश्लील बातें करना, (२०) निम्नवायु परित्याग करना, (२१) गुरुके अतिरिक्त और दूसरेको प्रणाम या अभिवादन करना, (२२) श्रीविग्रहकी ओर पीठ करके बैठना, (२३) पान एवं तम्बाकू खाना, (२४) अपवित्र या उच्छिष्ट शरीरसे श्रीविग्रहको प्रणाम या वन्दना करना, (२५) लोमवाला कम्बल ओढ़कर सेवाकार्य आदि करना, (२६) वित्तशाठ्य अर्थात् सामर्थ्य रहने पर भी थोड़ेसे उपचारोंसे या थोड़ेसे अर्थद्वारा सेवाकार्य या पूजा-उत्सवादि करना, (२७) भगवानको निवेदन न की गई वस्तुएँ ग्रहण करना, (२८) ऋतु तथा समयके अनुसार प्राप्त फल तथा द्रव्य भगवानको भोग न देना, (२९) संग्रहीत द्रव्यका प्रथम भाग किसी दूसरेको देकर फिर शेष भाग भगवानको भोग देना, (३०) श्रीगुरुजीके आगे स्तव आदि न कर मौन होकर बैठे रहना,

(३१) श्रीगुरुजीके सामने अपनी प्रशंसा करना और (३२) देवताओंकी निन्दा करना।

इन ३२ प्रकारके सेवापराधोंके अतिरिक्त वराहपुराणमें कहे गये और भी कुछ अपराध वर्जनीय हैं—(३३) अन्धकार गृहमें श्रीविग्रहका स्पर्श करना, (३४) बिना ताली बजाये मन्दिरका द्वार खोलना, (३५) विधिका उल्लंघन कर स्वेच्छासे श्रीविग्रहकी सेवा करना, (३६) कुत्तेके द्वारा देखा गया पदार्थ भगवानको निवेदन करना, (३७) पूजा करनेके समय मौन न रहना, (३८) बिना दाँत धोये पूजा करना, (३९) अयोग्य या अनुपयुक्त पुष्पोंसे पूजा करना, (४०) स्त्री संभोग करके पूजा करना, (४१) रजस्वला स्त्रीका स्पर्शकर पूजा करना, (४२) शवका स्पर्शकर पूजा करना, (४३) रक्तवर्ण, नील वर्ण, बिना धुले या किसी दूसरेके द्वारा व्यवहार किये हुए वस्त्रोंको पहनकर पूजा करना, (४४) किसी मृतव्यक्तिका दर्शनकर पूजा करना, (४५) क्रोध करके श्रीविग्रहका स्पर्श या पूजा करना, (४६) श्मशानसे आकर पूजा करना, (४७) शरीरमें तेल लगाकर श्रीविग्रहका स्पर्श या उनकी सेवा करना, (४८) एरण्ड (रेंडी) पत्तेमें लाये गये फूलोंद्वारा पूजा करना, (४९) भूमि या पीढ़ेपर बैठकर पूजा करना, (५०) बासी फूलोंसे पूजा करना, (५१) पूजाकालमें थूकना या नाक साफ करना, (५२) अपनेको बड़ा पूजक समझना, (५३) टेढ़ा ऊर्द्ध्वपुण्ड्र धारण करना, (५४) पैर न धोकर मन्दिरमें प्रवेश करना, (५५) स्नान कराते समय बायें हाथसे श्रीविग्रहका स्पर्श करना, (५६) अवैष्णवोंद्वारा

पकाया हुआ अन्न भगवानको निवेदन करना, (५७) अवैष्णवोंके सामने श्रीविग्रहकी पूजा, (५८) पसीनेयुक्त शरीरसे पूजा करना, (५९) कापालिकको देखकर पूजा करना, (६०) भगवानका निर्माल्य उल्लंघन करना, (६१) भगवानका नाम लेकर शपथ ग्रहण करना, (६२) श्रीभगवत्प्रतिपादक शास्त्रोंका अनादर कर दूसरे शास्त्रोंका आदर करना, (६३) आसुरिक कालमें पूजा करना, (६४) नखोंसे स्पर्श किये जलसे अर्चन करना।

नामापराध

(१) श्री हरिभक्ति परायण साधुओंकी निन्दा (२) श्रीविष्णुसे शिवादि देवताओंको स्वतन्त्र मानना एवं श्रीहरिनामसे शिव आदिके नामोंको स्वतन्त्र समझना अर्थात् अन्य देवताओंको स्वतन्त्र ईश्वर समझना एवं श्रीकृष्णके नाम-रूप-गुण-लीलाको श्रीकृष्णके स्वरूपसे भिन्न समझना, (३) नाम-तत्त्वविद् गुरुकी अवज्ञा (४) वेद और सात्वत पुराण आदिकी निन्दा, (५) श्रीहरिनामके माहात्म्यको अति स्तुति समझना, (६) श्रीभगवानके नामको कल्पित समझना, (७) नामके बलपर पाप करना, (८) दूसरे-दूसरे शुभ कर्मोंको श्रीनामके बराबर समझना एवं नाम ग्रहण करनेमें आलस्य करना या अन्यमनस्क होना (९) श्रद्धाहीन एवं विमुख व्यक्तिको हरिनामका उपदेश देना (१०) श्रीनामकी महिमा श्रवण करनेपर भी 'मैं और मेरा' रूप देहात्मबुद्धिसे युक्त होकर हरिनाममें प्रीति या अनुराग न करना।

श्रीमहाप्रसाद–माहात्म्य

(प्रसाद पाते समय कीर्त्तनीय)

[१]

"महाप्रसादे गोविन्दे नाम–ब्रह्मणि वैष्णवे।
स्वल्पपुण्यवतां राजन् विश्वासो नैव जायते॥"

शरीर अविद्या–जाल, जड़ेन्द्रिय ताहे काल,
जीवे फेले विषय सागरे।
तार मध्ये जिह्वा अति, लोभमय सुदुर्मति,
ताके जेता कठिन संसारे॥
कृष्ण बड़ दयामय, करिवारे जिह्वा जय,
स्वप्रसाद अन्न दिला भाइ।
सेइ अन्नामृत पाओ, राधाकृष्ण गुण गाओ,
प्रेमे डाको चैतन्य निताई॥

[२]

एकदिन शान्तिपुरे, प्रभु अद्वैतेर घरे,
दुइ प्रभु भोजने बसिल।
शाक करि आस्वादन, प्रभु बले, भक्तगण,
एइ शाक कृष्ण आस्वादिल॥
हेन शाक आस्वादने, कृष्ण प्रेम आइसे मने,
सेइ प्रेमे कर आस्वादन।
जड़बुद्धि परिहरि, प्रसाद भोजन करि,
हरि हरि बल सर्वजन॥

[३]

शचीर अङ्गने कभु, माधवेन्द्रपुरी प्रभु,
प्रसादान्न करेन भोजन।
खाइते खाइते ताँर, आइल प्रेम सुदुर्वार,
बले शुन–संन्यासीर गण॥
मोचा–घंट फुलबड़ि, डालि–डालना–चच्चड़ि,
शचीमाता करिल रन्धन।
ताँर शुद्धा भक्ति हेरि, भोजन करिल हरि,
सुधा सम ए अन्न व्यञ्जन॥
योगे योगी पाय जाहा, भोगे आज हबे ताहा,
हरि बलि खाओ सबे भाइ।
कृष्णेर प्रसाद अन्न, त्रिजगत् करे धन्य,
त्रिपुरारि नाचे जाहा पाइ॥

श्रीगुरुदेवकी आरती

जय जय गुरुदेव भकतिप्रज्ञान।
परम मोहन रूप आर्त्त–विमोचन॥
मूर्तिमन्त श्रीवेदान्त अशुभनाशन।
"भक्तिग्रन्थ श्रीवेदान्त" तव विघोषण॥
वेदान्तसमिति–दीपे श्रीसिद्धान्त–ज्योति।
आरति तोमार ताहे हय निरवधि॥
श्रीविनोदधारा–तैले दीप प्रपूरित।
रूपानुग–धूपे दशदिक् आमोदित॥
सर्वशास्त्र–सुगम्भीर करुणा–कोमल।
युगपत् सुशोभन वदन कमल॥
स्वर्णकान्ति विनिन्दित श्रीअङ्गशोभन।
यतिवास परिधाने जगत्–कल्याण॥
नाना छाँदे सज्जन चामर ढुलाय।
गौरजन उच्चकण्ठे सुमधुर गाय॥
सुमङ्गल नीराजन करे भक्तगण।
दूरमति दूर हैते देखे त्रिविक्रम॥

श्रील प्रभुपादकी आरती

[सन्ध्यारती]

जय जय प्रभुपादेर आरति नेहारि।
योगमायापुर–नित्यसेवा–दानकारी ॥
सर्वत्र प्रचार धूप सौरभ मनोहर।
बद्ध–मुक्त अलिकुल मुग्ध चराचर॥
भकति–सिद्धान्त–दीप ज्वालिया जगते।
पञ्चरस–सेवा–शिखा प्रदीप्त ताहाते॥
पञ्च महादीप यथा पञ्च महाज्योति।
त्रिलोक–तिमिर नाशे अविद्या दुर्मति॥
भकतिविनोद धारा जल–शंख–धार।
निरवधि बहे ताहा रोध नाहि आर॥
सर्ववाद्यमयी घण्टा बाजे सर्वकाल।
वृहत्मृदङ्ग–वाद्य परम रसाल॥
विशाल ललाटे शोभे तिलक उज्ज्वल।
गलदेशे तुलसीमाला करे झलमल॥
आजानुलम्बित बाहु दीर्घ कलेवर।
तप्तकाञ्चन–वरण परम सुन्दर॥
ललित–लावण्य मुखे स्नेहभरा हासि।
अङ्गकान्ति शोभे जैछे नित्य पूर्णशशी॥
यतिधर्म परिधाने अरुण वसन।
मुक्त कैल मेघावृत गौड़ीय गगन॥
भकति–कुसुमे कत कुञ्ज विरचित।
सौन्दर्य–सौरभे तार विश्व विमोहित॥
सेवादर्शे नरहरि चामर ढुलाय।
केशव अति आनन्दे नीराजन गाय॥

श्रीगौरगोविन्दकी मङ्गलारती

मङ्गल श्रीगुरु–गौर मङ्गल मूरति।
मङ्गल श्रीराधाकृष्ण–युगल पीरिति॥
मङ्गल निशान्त लीला मङ्गल उदये।
मङ्गल आरति जागे भकत हृदये॥
तोमार निद्राय जीव निद्रित धराय।
तव जागरणे विश्व जागरित हय॥
शुभदृष्टि कर एबे जगतेर प्रति।
जागुक हृदये मोर सुमङ्गलारति॥
मयूर–शुकादि सारि कत पिकराज।
मङ्गल जागर हेतु करिछे विराज॥
सुमधुर ध्वनि करे जत शाखीगण।
मङ्गल श्रवणे बाजे मधुर कूजन॥
कुसुमित सरोवरे कमल–हिल्लोल।
मङ्गल सौरभ बहे पवन कल्लोल॥
झाँझर काँसर घण्टा शंख करताल।
मङ्गल मृदङ्ग बाजे परम रसाल॥
मङ्गल आरति करे भकतेर गण।
अभागा केशव करे नाम–संकीर्त्तन॥
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द।
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौर भक्तवृन्द॥
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

श्रीगौरसुन्दरकी सन्ध्या आरती

जय जय गोराचाँदेर आरतिको शोभा।
जाह्नवी तटवने जगमन लोभा॥
दक्षिणे निताइ चाँद, वामे गदाधर।
निकटे अद्वैत श्रीनिवास छत्रधर॥
बसियाछे गोराचाँद रत्न–सिंहासने।
आरति करेन ब्रह्मा–आदि देवगणे॥
नरहरि आदि करि' चामर ढुलाय।
सञ्जय मुकुन्द वासुघोष आदि गाय॥
शंख बाजे, घण्टा बाजे, बाजे करताल।
मधुर मृदङ्ग बाजे परम रसाल॥
बहुकोटि चन्द्र जिनि' वदन उज्ज्वल।
गलदेशे वनमाला करे झलमल॥
शिव–शुक–नारद प्रेमे गद्‌गद।
भकतिविनोद देखे गोरार सम्पद॥

श्रीयुगल–आरती

जय जय राधाकृष्ण युगल–मिलन।
आरति करये ललितादि सखीगण॥
मदन–मोहन रूप त्रिभङ्ग सुन्दर।
पीताम्बर शिखिपुच्छ चूड़ा मनोहर॥
ललित माधव–बामे वृषभानु कन्या।
नील–वसना गौरी रूपे गुणे धन्या॥
नानाविध अलंकार करे झलमल।
हरिमन–विमोहन वदन उज्ज्वल॥
विशाखादि सखीजन नाना रागे गाय।
प्रियनर्म सखीजत चामर ढुलाय॥
श्रीराधा–माधव–पद सरसिज आशे।
भकति विनोद सखी, पदे सुखे भासे॥

printed version
only to page 80

श्रीतुलसी–आरती

'नमो नमः तुलसी कृष्ण–प्रेयसी' (नमो नमः)।
राधाकृष्ण नित्यसेवा–'एइ अभिलाषी'॥
'जे तोमार शरण लय', सेइ कृष्ण सेवा पाय,
'कृपा करि' कर तारे 'वृन्दावनवासी'।
तुलसी कृष्ण प्रेयसी (नमो नमः)॥
तोमार चरणे धरि, मोरे अनुगत करि',
गौरहरि–सेवा–मग्न राख दिवानिशि।
तुलसी कृष्ण प्रेयसी (नमो नमः)॥
दीनेर एइ अभिलाष, मायापुरे/नवद्वीपे दिओ वास,
अंगेते माखिब सदा धाम–धूलिराशि।
तुलसी कृष्ण प्रेयसी (नमो नमः)॥
तोमार आरति लागि', धूप, दीप, पुष्प माँगि,
महिमा बखानि एबे–हओ मोरे खुशी।
तुलसी कृष्ण प्रेयसी (नमो नमः)॥
जगतेर जत फूल, कभु नहे समतुल,
सर्वत्यजि कृष्ण तव पत्र मंजरी विलासी।
तुलसी कृष्ण प्रेयसी (नमो नमः)॥
ओगो वृन्दे महारानी!
तोमार पादप तले, देव–ऋषि कुतूहले,
सर्वतीर्थ ल'ये ताँ'रा हन अधिवासी।
तुलसी कृष्ण प्रेयसी (नमो नमः)॥
श्रीकेशव अति दीन, साधन–भजन–हीन,
तोमार आश्रये सदा नामानन्दे भासि।
तुलसी कृष्ण प्रेयसी (नमो नमः)॥

सङ्कल्प

ॐ विष्णुः ॐ तत्सत् अद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे, श्वेतवराहकल्पे (वा पाद्मकल्पे), वैवस्वताख्यमन्वन्तरे, अष्टाविंशतिकलियुगस्य प्रथमसन्ध्यायां ब्रह्मविंशतौ वर्त्तमानायां, यथानाम शुभसम्वत्सरे, यथायने, अमुक–ऋतौ, अमुक–मासि, अमुक–पक्षे, अमुक–राशिस्थिते भास्करे, अमुक–तिथौ, अमुक वारान्वितायां अमुक–नक्षत्रसंयुतायां, श्रीचन्द्रमसि यथास्थानावस्थिते भौमादिग्रहयोग–करण–मुहूर्त्तशकादिषु, जम्बुद्वीपे भारतखण्डे मेधीभूतस्य सुमेरोः दक्षिणे लवणार्णवस्योत्तरे कोणे गङ्गायाः पश्चिमे (वा अन्यास्मिन्) भागे पुराणभूमौ श्रीशालग्रामशिला–गो– ब्राह्मण–वैष्णव–वह्नी–सन्निधौ अस्मिन् विशिष्टे भारतवर्षाख्यपुण्य– भूप्रदेशे अमुकगोत्रस्य कृष्णभक्तिलाभार्थे सर्वेषां कल्याणार्थे तथा भगवत् प्रीत्यर्थे/श्राद्धकर्मणे/वैष्णव हवनं च भगवत्पूजनं यथासाध्य मया क्रियते।

श्रीविष्णु–स्मरण व मङ्गलशान्ति

पूजासे पहले शास्त्र–सम्मत श्रीविष्णु–स्मरण व मङ्गल–शान्ति पाठ करें। श्रीविष्णु–स्मरण, यथा–

१. (ॐ) यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परे प्रधानं पुरुषं तथाऽन्ये।

विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय॥

२. ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयो दिवीव चक्षुराततम्।

३. ॐ कृष्णो वै सच्चिदानन्दघनः, कृष्ण आदिपुरुषः, कृष्णः पुरुषोत्तमः, कृष्णो हा उ कर्मादिमूलं, कृष्णः स ह सर्वैकार्यः, कृष्णः काशंकृदादीशमुखप्रभुपूज्यः, कृष्णोऽनादिस्तस्मिन्नजाण्डान्तर्बाह्ये यन्मङ्गलं तल्लभते कृती।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

स्वस्तिवाचन

हाथमें कुंकुमयुक्त व हल्दी मिश्रित चावल अथवा सुगन्धित पुष्प लेकर स्वस्तिवाचन पाठ करें—

ॐ स्वस्ति नो गोविन्दः स्वस्ति नोऽच्युतानन्तौ,
स्वस्ति नो वासुदेवो विष्णुर्दधातु।
स्वस्ति नो नारायणो नरो वै,
स्वस्ति नः पद्मनाभः पुरुषोत्तमो दधातु॥
स्वस्ति नो विश्वक्सेनो विश्वेश्वरः,

स्वस्ति नो हृषिकेशो हरिर्दधातु।
स्वस्ति नो वैनतेयो हरिः,
स्वस्ति नोऽञ्जनासुतो हनूर्भागवतो दधातु॥
स्वस्ति स्वस्ति सुमङ्गलैकेशो महान् श्रीकृष्णः,
सच्चिदानन्दघनः सर्वेश्वरेश्वरो दधातु॥

करोतु स्वस्ति मे कृष्णः सर्वलोकेश्वरेश्वरः।
कार्ष्णादयश्च कुर्वन्तु स्वस्ति मे लोकपावनाः॥

(सम्मोहनतन्त्र)

कृष्णो ममैव सर्वत्र स्वस्ति कुर्यात् श्रिया समम्।
तथैव च सदा कार्ष्णि सर्वविघ्नविनाशनः॥

(विष्णुयामलसंहिता)

मङ्गलवाचन

अतसीकुसुमोपमेयकान्तिर्यमुनाकुलकदम्बमूलवर्त्ती।
नवगोपवधूविलासशाली वितनोतु नो मङ्गलाणि॥

(विष्णुरहस्य)

कृष्णः करोतु कल्याणं कंसकुञ्जरकेशरी।
कालिन्दीजलकल्लोलकोलाहलकुतूहलः॥

(नारदीयपुराण)

माधवो माधवो वाचि माधवो माधवो हृदि।
स्मरन्ति साधवः सर्वे सर्वकार्येषु माधवम्॥

(नारसिंह)

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराभवः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्द्दनः॥
(पाण्डवगीता)

मङ्गलं भगवान विष्णुर्मङ्गलं मधुसूदनः।
मङ्गलं हृषिकेशोऽयं मङ्गलायतनो हरिः॥
विष्णूच्चारणमात्रेण कृष्णस्य स्मरणोद्धरेः।
सर्वविघ्नानि नश्यन्ति मङ्गलं स्यान्न संशयः॥
(बृहद्विष्णुपुराण)

सत्यं कलियुगे विप्र श्रीहरेर्नाम मङ्गलं।
परं स्वस्त्ययनं नृणां नास्त्येव गतिरन्यथा॥
(पद्मपुराण)

पुण्डरीकाक्ष–गोविन्द–माधवादींश्च यः स्मरेत्।
तस्य स्यान्मङ्गलं सर्वकर्मादौ विघ्ननाशनम्॥
(विष्णुधर्मोत्तर)

मङ्गलायतनं कृष्णं गोविन्दं गरुडध्वजम्।
माधवं पुण्डरीकाक्षं विष्णुं नारायणं हरिम्॥
वासुदेवं जगन्नाथमच्युतं मधुसूदनम्।
तथा मुकुन्दानन्तादीन् यः स्मरेत् प्रथमं सुधीः॥
कर्त्ता सर्वत्र सुतरां मङ्गलानान्त कर्मणः॥
(रुद्रयामल तन्त्र)

श्रीकृष्णस्तोत्रम्

ॐ नमो विश्वरूपाय विश्वस्थित्यन्तहेतवे।
विश्वेश्वराय विश्वाय गोविन्दाय नमो नमः ॥१॥

नमो विज्ञानरूपाय परमानन्दरूपिणे।
कृष्णाय गोपीनाथाय गोविन्दाय नमो नमः ॥२॥

नमः कमलनेत्राय नमः कमलमालिने।
नमः कमलनाभाय कमलापतये नमः ॥३॥

बर्हापीडाभिरामाय रामायाकुण्ठमेधसे।
रमामानसहंसाय गोविन्दाय नमो नमः ॥४॥

कंसवंशविनाशाय केशिचाणूरघातिने।
वृषभध्वजवन्द्याय पार्थसारथये नमः ॥५॥

वेणुवादनशीलाय गोपालायाहिमर्दिने।
कालिन्दीकूललोलाय लोलकुण्डलधारिणे ॥६॥

बल्लवी–नयनाम्भोज–मालिने नृत्यशालिने।
नमः प्रणतपालाय श्रीकृष्णाय नमो नमः ॥७॥

नमः पापप्रणाशाय गोवर्द्धनधराय च।
पूतनाजीवितान्ताय तृणावर्त्तासु–हारिणे ॥८॥

निष्कलाय विमोहाय शुद्धायाशुद्धिवैरिणे।
अद्वितीयाय महते श्रीकृष्णाय नमो नमः ॥९॥

प्रसीद परमानन्द! प्रसीद परमेश्वर!
आधिव्याधिभुजङ्गेन दष्टं मामुद्धर प्रभो ॥१० ॥

श्रीकृष्ण रुक्मिणीकान्त गोपीजनमनोहर।
संसारसागरे मग्नं मामुद्धर जगद्‌गुरो ॥११ ॥

केशव क्लेशहरण नारायण जनार्दन।
गोविन्द परमानन्द मां समुद्धर माधव ॥१२ ॥